1. अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

1. एक अर्थव्यवस्था के कौन-कौन-से क्षेत्र होते हैं?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था का प्राय: दो दृष्टियों से वर्गीकरण किया जाता है- स्वामित्व के आधार पर तथा व्यवसाय के आधार पर स्वामित्व के आधार पर किसी अर्थव्यवस्था के दो मुख्य क्षेत्र होते हैं- निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र। भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है तथा इसमें एक संयुक्त क्षेत्र भी है। इस क्षेत्र के उद्योग या व्यवसाय में निजी उद्योगपति और सरकार दोनों की साझेदारी होती है।

व्यवसाय या आर्थिक क्रियाओं के आधार पर किसी अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्र होते हैं- प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र।

2. मिश्रित अर्थव्यवस्था की धारणा से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - मिश्रित अर्थव्यवस्था की धारणा अपेक्षाकृत एक नवीन धारणा है। पूँजीवाद एवं समाजवाद आर्थिक व्यवस्था के दो पृथक रूप हैं। जहाँ पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यक्ति को पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता रहती है, वहाँ समाजवादी अर्थव्यवस्था इसे समाप्त कर देती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था इन दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच का मार्ग है। इसमें पूँजीवाद एवं समाजवाद दोनों के गुण विद्यमान होते हैं। इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्र सरकार के अधीन होते हैं तथा शेष निजी उद्यम के हाथ में छोड़ दिए जाते हैं।

3. समाजवादी अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - समाजवादी अर्थव्यवस्था एक नई आर्थिक व्यवस्था है। इसके अंतर्गत उत्पादन के सभी साधन राज्य अथवा सरकार के अधीन होते हैं तथा उनपर राज्य का स्वामित्व और नियंत्रण होता है। इस व्यवस्था में अधिकतम सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण किया जाता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन का उद्देश्य लाभ अर्जित करना नहीं, वरन लोककल्याण होता है। इसमें समाज के प्रत्येक सदस्य की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है।

4. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था क्या है?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - इसमें उत्पादन के साधनों पर किसी व्यक्ति या निजी संस्था का अधिकार होता है। इसके अंतर्गत व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से आर्थिक क्रियाओं का संचालन किया जाता है। इस प्रकार, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था आर्थिक संगठन की एक ऐसी प्रणाली है जो निजी संपत्ति, व्यक्तिगत लाभ एवं निजी प्रेरणा पर आधारित होती है। इसमें राज्य या सरकार किसी व्यक्ति के आर्थिक क्रियाकलाप में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करती। यह मूल्य प्रणाली पर आधारित बाजार अर्थव्यवस्था है। अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, कनाडा आदि विश्व के अधिकांश विकसित देशों में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था है।

5. निजी क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - जब किसी उद्योग या व्यवसाय का संगठन एवं संचालन किसी व्यक्ति या निजी संस्था के द्वारा किया जाता है, तो उसे निजी उद्यम कहते हैं। इस प्रकार के निजी उद्यमों का समूह ही निजी क्षेत्र का निर्माण करता है। इस क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों पर निजी उद्योगपतियों का स्वामित्व होता है। यह क्षेत्र लाभ के उद्देश्य से उत्पादन एवं वितरण का कार्य करता है। निजी क्षेत्र के उद्योगपति कठिन परिश्रम करते हैं तथा प्रायः उनकी उत्पादन- कुशलता अधिक होती है। परंतु, अधिकतम लाभ अर्जित करने के लिए वे प्राय: श्रमिकों एवं उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं। यही कारण है कि सरकार इस क्षेत्र के आर्थिक क्रियाकलापों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित करती है।

6. सार्वजनिक क्षेत्र क्या है ?

उत्तर - सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत वे उद्योग या व्यवसाय आते हैं जिनपर सरकार का नियंत्रण रहता है। इस क्षेत्र के उद्योग सरकार द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होते हैं तथा सरकार ही उनका एकमात्र स्वामी या प्रमुख अंशधारी होती है। इस प्रकार, राजकीय अथवा सरकारी उपक्रमों के समूह को सार्वजनिक क्षेत्र की संज्ञा दी जाती है। निजी उपक्रमों के समान ही सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं। परंतु, यह क्षेत्र उत्पादन की प्रक्रिया में लोककल्याण को अधिक महत्त्व देता है।

7. आर्थिक नियोजन किसे कहते हैं? नियोजन के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर - नियोजन का अर्थ राज्य या निर्धारित सत्ता द्वारा संपूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था के एक विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर उचित आर्थिक निर्णय लेना है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक प्राथमिकताओं के आधार पर लक्ष्यों का निर्धारण कर उन्हें एक निश्चित अवधि में पूरा करने का प्रयास ही आर्थिक नियोजन है।

PDFSARTHI.COM

भारत एक अर्द्धविकसित राष्ट्र है। देश के अधिकांश नागरिकों का जीवन-स्तर बहुत निम्न है। अतः, आर्थिक विकास की दर को अधिक तीव्र बनाना हमारी योजनाओं का मुख्य उद्देश्य है। आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की प्राप्ति, निर्धनता निवारण, रोजगार के अवसरों में वृद्धि तथा सामाजिक एवं आर्थिक न्याय की स्थापना भारत में आर्थिक नियोजन के अन्य मौलिक उद्देश्य हैं।

8. मानव विकास रिपोर्ट अथवा मानव विकास सूचकांक क्या है ?

उत्तर - दो देशों के विकास के स्तर की तुलना करने के लिए प्रायः प्रतिव्यक्ति आय की धारणा का प्रयोग किया जाता है। लेकिन, यह उनके विकास के स्तर को मापने का एक अपर्याप्त मापदंड है। यही कारण है कि कुछ अर्थशास्त्रियों ने विकास की माप के लिए आय के साथ ही कई अन्य मापदंडों पर भी विचार किया है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (United Nations Development Programme, UNDP) 1990 से प्रतिवर्ष एक मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित कर रही है। इसमें विभिन्न देशों के विकास के स्तर की तुलना लोगों के शैक्षिक स्तर, उनकी स्वास्थ्य स्थिति और प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर की जाती है। मानव विकास सूचकांक इन तीनों चरों का औसत है।

9. मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं का विकास से क्या संबंध है ?

उत्तर - आम आदमी को मूलभूत वस्तु / सेवा उपलब्ध कराना ही विकास का उद्देश्य है। रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य सेवा, बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा आदि जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। जिस देश में ये सुलभ हैं, वे देश विकसित हैं। मानव विकास सूचकांक में प्रतिव्यक्ति आय से नागरिक के वस्तु/सेवा खरीदने की क्षमता का पता चलता है। स्वास्थ्य की स्थिति, शिशु मृत्यु-दर, जीवन प्रत्याशा तथा साक्षरता से मानव विकास के स्तर का पता चलता है। भारत का मानव विकास सूचकांक कम है, क्योंकि हम लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को सुलभ नहीं करवा पाए हैं।

10. समावेशी विकास से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - विकास की वह प्रक्रिया समावेशी विकास कहलाती है जो विकास के लाभ को समाज के अंतिम पायदान पर स्थित लोगों तक पहुँचाने, उनका जीवन-स्तर ऊँचा उठाने तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल करने का प्रयास करती है। समावेशी विकास को ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य बनाया गया था, क्योंकि कई

PDFSARTHI.COM

दशक के सार्थक प्रयास के बावजूद भी भारत के कई कमजोर वर्ग एवं भौगोलिक क्षेत्र विकास के लाभ से वंचित रह गए थे।

11. एक अर्थव्यवस्था की आधारभूत संरचना से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना है। कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र इन सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। परंतु, इनके संचालन के लिए कुछ आधार संरचनाएँ आवश्यक होती हैं।

आधारभूत संरचना पूँजीगत ढाँचे का वह रूप है जो अर्थव्यवस्था में सेवाएँ प्रदान करता है। इस प्रकार की संरचनाएँ सामाजिक एवं आर्थिक दो प्रकार की होती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं अन्य नागरिक सुविधाएँ सामाजिक संरचना के अंग हैं जो हमारी आर्थिक प्रक्रिया की अप्रत्यक्ष रूप में सहायता करती हैं। यातायात एवं संचार, शक्ति, सिंचाई, मौद्रिक एवं वित्तीय संस्थाएँ आर्थिक संरचना के अंग हैं, जो उत्पादन एवं वितरण का हिस्सा बनकर अपनी सेवाएँ प्रदान करती हैं।

अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

1. आर्थिक विकास क्या है ? आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अंतर बताइए।

उत्तर - आर्थिक विकास आय या उत्पादन में वह वृद्धि है जो उत्पादन की तकनीक एवं अर्थव्यवस्था के ढाँचे में परिवर्तन से प्राप्त हो । उदाहरण के लिए, हरित क्रांति एवं भूमि सुधार के कारण कृषि उत्पादन में हुई वृद्धि को हम आर्थिक विकास का सूचक मान सकते हैं। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाना है। इसके लिए अर्थव्यवस्था के निष्क्रिय संसाधनों को गतिशील किया जाता है। जहाँ आर्थिक वृद्धि संसाधनों के संवर्द्धन से आसानी से प्राप्त की जा सकती है, वहीं विकास एक विस्तृत और जटिल प्रक्रिया है। विकास के उद्देश्यों में प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि के साथ-साथ गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, शिशु मृत्यु-दर आदि में कमी भी शामिल हैं। अतः, विकास कल्याण एवं जीवन की गुणवत्ता से संबंधित है।

सारांश में, हम यह कह सकते हैं कि आर्थिक वृद्धि शब्द का प्रयोग विकसित राष्ट्रों के लिए किया जाता है जबकि आर्थिक विकास का व्यवहार विकासशील राष्ट्रों के संदर्भ में किया जाता है। धनी देश की आय में वृद्धि 'आर्थिक वृद्धि' है। वहीं गरीब देश की आय में बढ़ता स्तर 'आर्थिक विकास' है।

PDFSARTHI.COM

2. आर्थिक विकास की पाप के लिए प्रयोग किए जानेवाले विभिन्न मापदंडों अथवा सूचकांकों का उल्लेख करें।

उत्तर - आर्थिक विकास की माप के लिए प्रायः राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय की अवधारणाओं का प्रयोग किया जाता है। परंतु, इसमें कुछ कमियाँ हैं। सर्वप्रथम, राष्ट्रीय आय की गणना में उन आर्थिक क्रियाकलापों को सम्मिलित नहीं किया जाता है, जो बाजार से संबंधित नहीं है अथवा जिनका विनिमय नहीं होता है। इसी प्रकार, प्रतिव्यक्ति आय किसी देश के विकास के स्तर की जानकारी प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण मापदंड है। हम प्रायः प्रतिव्यक्ति या नागरिकों की औसत आय द्वारा ही दो या दो से अधिक देशों के विकास के स्तर की तुलना करते हैं। औसत आय की धारणा तुलना के लिए उपयोगी है, लेकिन यह आय के वितरण की विषमताओं को छिपा देती है।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, विकास लोगों के कल्याण से संबंधित है जो आर्थिक संघटकों के साथ ही कई गैर-आर्थिक घटकों से भी प्रभावित होता है। अतएव, इन्होंने विकास के स्तर की माप के लिए ऐसे सूचकों का प्रयोग किया है जिन्हें जीवन की गुणवत्ता का सूचकांक कहा जा सकता है। इनमें भौतिक गुणवत्ता का सूचक तथा मानव विकास सूचक महत्त्वपूर्ण हैं। यह किसी देश के नागरिकों के शैक्षिक स्तर, उनके स्वास्थ्य की स्थिति और प्रतिव्यक्ति आय पर आधारित है।

3. आर्थिक विकास के मुख्य क्षेत्रों का वर्णन करें।

उत्तर - आज विश्व के सभी देशों का मूल उद्देश्य आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र बनाना है। आर्थिक विकास का अभिप्राय देश के प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के कुशल प्रयोग द्वारा राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि करना है। जब किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों पर श्रम और पूँजी लगाकर उनका उपयोग किया जाता है तब उससे प्रत्येक लेखावर्ष में एक निश्चित मात्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन होता है। यह देश की राष्ट्रीय आय है।

इस प्रकार, राष्ट्रीय आय एक निश्चित अवधि में देश के कुल उत्पादन का मौद्रिक मूल्य है तथा वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन प्रक्रिया से ही इसका सृजन होता है। एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन के तीन मुख्य क्षेत्र होते हैं जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करते हैं - प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र। प्राथमिक क्षेत्र को कृषि क्षेत्र भी कहते हैं। इस क्षेत्र के अंतर्गत कृषि एवं इसकी सहायक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है; जैसे - पशुपालन, वानिकी, मत्स्यपालन, खनन इत्यादि । द्वितीयक क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र भी कहते हैं। इसमें सभी प्रकार के निर्माण उद्योग, विद्युत, गैस तथा जलापूर्ति आदि शामिल हैं। तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहते

PDF SARTHI.COM

हैं। यह क्षेत्र वस्तुओं का नहीं, वरन सेवाओं का उत्पादन करता है। आर्थिक विकास के ये तीन प्रमुख क्षेत्र हैं तथा अर्थव्यवस्था के विकास के लिए इनका विकास आवश्यक है।

4. आर्थिक विकास के प्रमुख कारकों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - किसी देश का आर्थिक विकास कई तत्त्वों या कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें निम्नांकित महत्त्वपूर्ण हैं।

(i) प्राकृतिक संसाधन - प्राकृतिक संसाधनों से हमारा अभिप्राय जलवायु, भूमि, नदियाँ, जंगल, जीव-जंतु आदि उन सभी संसाधनों से है, जो किसी देश को प्रकृति द्वारा प्रदत्त हैं। इन प्राकृतिक संसाधनों पर श्रम एवं पूँजी के प्रयोग से ही वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है।

(ii) पूँजी निर्माण - किसी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में पूँजी का योगदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है। प्रथम, पूँजी के प्रयोग से श्रम की उत्पादकता, अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता तथा राष्ट्रीय आय के स्तर में वृद्धि होती है। द्वितीय, पूँजी उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के प्रकार एवं गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होती है। तृतीय, पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि होने से प्रयोग एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) तकनीकी विकास - तकनीकी विकास का अभिप्राय उत्पादन की आधुनिक एवं श्रेष्ठ तकनीक एवं विधियों के विकास तथा प्रयोग से है। तकनीकी विकास से देश के उपलब्ध संसाधनों का कुशलतम प्रयोग होता है।

(iv) मानवीय संसाधन - आर्थिक विकास की दृष्टि से मानवीय संसाधनों का सर्वाधिक महत्त्व है। इसका कारण यह है कि मनुष्य उत्पादन का साधन तथा साध्य दोनों ही है। मानवीय संसाधनों का महत्त्व इस कारण और बढ़ जाता है, क्योंकि प्राकृतिक संसाधन और पूँजी निष्क्रिय होते हैं। मनुष्य ही इन संसाधनों का प्रयोग कर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है।

5. अर्थव्यवस्था की संरचना से आप क्या समझते हैं? इसे कितने भागों में बाँटा गया है?

उत्तर - किसी भी अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है। इनके उत्पादन से ही हमारी आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। कृषि एवं उद्योग प्रत्यक्ष उत्पादक क्रियाओं के क्षेत्र हैं तथा इनमें सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं का उत्पादन होता है। परंतु, उत्पादन प्रक्रिया में कई प्रकार की सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। अर्थव्यवस्था की संरचना से हमारा अभिप्राय उस पूँजीगत ढाँचा से है जो अर्थव्यवस्था में

PDFSARTHI.COM

सेवाएँ प्रदान करता है। इसे सेवाएँ प्रदान करनेवाली पूँजीगत संरचना अथवा आधारभूत संरचना भी कहते हैं। इस सहायक ढाँचा या संरचना के अभाव में एक अर्थव्यवस्था का संचालन संभव नहीं है।

अर्थव्यवस्था में सेवाओं को आधार प्रदान करनेवाली संरचना दो प्रकार की होती है- सामाजिक एवं आर्थिक । सामाजिक संरचना आर्थिक क्रियाओं को अप्रत्यक्ष रूप में बाहर से सहायता प्रदान करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं अन्य नागरिक सुविधाएँ उत्पादक क्रियाओं को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। अर्थव्यवस्था में सेवाएँ प्रदान करनेवाली दूसरी संरचना आर्थिक संरचना है। यातायात एवं संचार साधन, शक्ति, सिंचाई आदि आर्थिक संरचना के अंग हैं। यह संरचना आर्थिक प्रक्रिया के भीतर रहकर उनमें प्रत्यक्ष रूप से भाग लेती है।

6. एक अर्थव्यवस्था के मुख्य कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करना है। परंतु, इसके लिए कई प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का संपादन होता है। इनमें प्रमुख हैं-

(i) उत्पादन - किसी भी देश के नागरिकों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कई प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की जरूरत पड़ती है। एक अर्थव्यवस्था में ही उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है।

(ii) विनिमय - सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य की आवश्यकताएँ भी बहुत बढ़ गई हैं। आज समाज का कोई भी सदस्य अपनी सभी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा नहीं कर सकता। वर्तमान समय में, प्रत्येक व्यक्ति केवल एक ही वस्तु का उत्पादन करता है और दूसरों से विनिमय या लेन-देन कर अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तुएँ प्राप्त करता है।

(iii) वितरण - आधुनिक समय में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन कई साधनों के सहयोग से होता है। अतः, राष्ट्रीय उत्पादन, अर्थात उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य का भी इन्हीं के बीच वितरण कर दिया जाता है। एक अर्थव्यवस्था ही इस बात का निर्णय लेती है कि उत्पादन के साधनों या कारकों के बीच उत्पादित संपत्ति का किस प्रकार वितरण हो।

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

(iv) आर्थिक विकास - अर्थव्यवस्था का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य आर्थिक विकास की गति को बनाए रखना है। इसके लिए यह वर्तमान उत्पादन के एक भाग को बचाकर उसका विनियोग करती है। इससे देश या समाज की भावी उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।

7. बिहार के आर्थिक विकास की स्थिति की विवेचना कीजिए।

उत्तर - देश का एक प्रमुख राज्य होने पर भी बिहार आर्थिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा हुआ है। वस्तुतः, आर्थिक विकास के प्रायः सभी मापदंडों पर यह देश के अन्य सभी राज्यों से नीचे है। किसी राज्य के विकास का स्तर अंततः उसके राज्य घरेलू उत्पाद पर निर्भर करता है। देश के विकसित राज्यों की तुलना में बिहार का शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद बहुत कम है। प्रतिव्यक्ति आय विकास का एक अन्य महत्त्वपूर्ण संकेतक है जो लोगों के जीवन-स्तर को प्रभावित करता है। जनसंख्या की सघनता अधिक होने के कारण बिहारवासियों की प्रतिव्यक्ति आय भी बहुत कम है। 2011-12 में जहाँ हरियाणा और महाराष्ट्र की प्रतिव्यक्ति आय क्रमशः 1,08,345 रुपये तथा 95,339 रुपये थी वहाँ बिहार की प्रतिव्यक्ति आय मात्र 22,890 रुपये थी।

खनिज संपदा औद्योगिक विकास का आधार है। विभाजन-पूर्व खनिज पदार्थों की दृष्टि से बिहार देश का सबसे धनी राज्य था। परंतु, विभाजन के पश्चात बिहार के अधिकांश खनिज झारखंड में चले गए। इसका बिहार के औद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। पूँजी आदि के अभाव में उत्तर बिहार के चीनी, जूट, कागज आदि अधिकांश कृषि-आधारित उद्योग रुग्ण अवस्था में हैं अथवा बंद हो गए हैं। परिणामतः, राज्य की अधिकांश जनसंख्या अपने जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर है।

परंतु, विगत वर्षों में बिहार में आर्थिक विकास की प्रक्रिया तीव्र हुई है। 2006-13 की अवधि में बिहार की अर्थव्यवस्था में 12 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। बिहार की प्रतिव्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है। प्रतिव्यक्ति आय 2005-06 के 7,875 रुपये से बढ़कर 2012-13 में 28,317 रुपये हो गई है।

PDFSARTHI.COM

1. अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास

1. आर्थिक क्रियाएँ वे क्रियाएँ हैं जिनसे

(A) आय प्राप्त होती है।

(B) संतुष्टि प्राप्त होती है।

(C) विभिन्न वस्तुएँ एवं सेवाएँ प्राप्त होती हैं।

(D) 'क' एवं 'ग' दोनों

Ans - D

2. अर्थव्यवस्था में रोजगार प्राप्त होता है।

(A) आर्थिक क्रियाओं के संपादन से

(B) अनार्थिक क्रियाओं के संपादन से

(C) राजनीतिक क्रियाओं के संपादन से

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - A

PDFSARTHI.COM

3. अर्थव्यवस्था का प्रमुख कार्य है।

(A) लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन

(B) लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान करना

(C) लोगों को आजीविका प्रदान करना

(D) इनमें सभी

Ans - D

4. इनमें कौन प्राथमिक क्षेत्र का उत्पाद नहीं है ?

(A) कृषि उत्पाद

(B) मछली

(C) पशुधन, मवेशी और उनके उत्पाद

(D) विनिर्माण के उत्पाद

Ans - D

5. भारत की राष्ट्रीय आय में किस क्षेत्र का सर्वाधिक योगदान है ?

(A) प्राथमिक क्षेत्र

(B) द्वितीयक क्षेत्र

(C) तृतीयक क्षेत्र

(D) विदेशी क्षेत्र

PDF SARTHI.COM

Ans - C

6. भारत में अँगरेजों के शासन में क्या बढ़ा ?

(A) गरीबी

(B) अशिक्षा

(C) शोषण

(D) इनमें सभी

Ans - D

7. अँगरेजों की औपनिवेशिक नीति का परिणाम था

(A) भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का पतन

(B) प्रतिव्यक्ति आय में स्थिरता

(C) कृषि पर जनसंख्या का बढ़ता बोझ

(D) इनमें सभी

Ans - D

8. भारत लगभग 200 वर्षों तक ब्रिटिश शासन का

(A) निवेश था

(B) उपनिवेश था

(C) निवेश साझेदार था

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

9. कोई राष्ट्र जो उपनिवेश हो, उसके आर्थिक एवं व्यावसायिक हितों का नियंत्रण होता है

(A) शासित देश के पास

(B) शासक देश के पास

(C) किसी अन्य उपनिवेश राष्ट्र के पास

(D) इनमें सभी

Ans - B

10. "अर्थव्यवस्था का अर्थ किसी राष्ट्र के संपूर्ण व्यवहार से होता है जिसके आधार पर मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वह अपने संसाधनों का प्रयोग करता है।" यह किसका कथन है?

(A) आदम स्मिथ का

(B) मार्शल का

(C) केन्स

(D) आर्थर लेविस का

Ans - D

PDF SARTHI.COM

11. "अर्थव्यवस्था आजीविका अर्जन की एक प्रणाली है।" यह किसका कथन है ?

(A) आदम स्मिथ का

(B) केन्स का

(C) आर्थर लेविस का

(D) मार्शल का

Ans - D

12. अर्थव्यवस्था के कितने प्रमुख क्षेत्र हैं ?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans - C

13. द्वितीयक क्षेत्र को कहा जाता है।

(A) औद्योगिक क्षेत्र

(B) कृषि क्षेत्र

(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था में

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - A

PDF SARTHI.COM

14. किस अर्थव्यवस्था में संसाधनों का स्वामित्व सरकार तथा व्यक्तियों (निजी क्षेत्रों) के पास होता है ?

(A) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में

(B) समाजवादी अर्थव्यवस्था में

(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था में

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - C

15. किस प्रक्रिया द्वारा किसी विकासशील देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है?

(A) आर्थिक वृद्धि

(B) आर्थिक विकास

(C) आर्थिक प्रगति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

16. किस शब्द का प्रयोग केवल विकासशील अर्थव्यवस्था के संदर्भ में किया जाता है?

(क) आर्थिक विकास

(ख) आर्थिक वृद्धि

(ग) आर्थिक प्रगति

PDF SARTHI.COM

(घ) इनमें कोई नहीं

Ans - A

17. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का उदाहरण है

(A) चीन

(B) क्यूबा

(C) अमेरिका

(D) भारत

Ans - C

18. समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के संसाधनों का स्वामित्व होता है।

(A) निजी व्यक्तियों के पास

(B) देश की सरकार के पास

(C) सरकार तथा निजी व्यक्तियों के पास

(D) दूसरे देश की सरकार के पास

Ans - B

19. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की आर्थिक समृद्धि

(A) बढ़ी है।

(B) घटी है।

PDF SARTHI.COM

(C) स्थिर रही है।

(D) अस्पष्ट है।

Ans - A

20. भारत एक

(A) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था है।

(B) समाजवादी अर्थव्यवस्था है।

(C) मिश्रित अर्थव्यवस्था है।

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - C

21. किस शब्द का प्रयोग विकसित देशों के वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि के लिए किया जाता है?

(A) आर्थिक विकास

(B) आर्थिक वृद्धि

(C) आर्थिक प्रगति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

PDF SARTHI.COM

22. किस विकास पद्धति में आगे आनेवाली पीढ़ी का ध्यान रखा जाता है ?

(A) आर्थिक प्रगति

(B) समावेशी विकास

(C) सतत धारणीय विकास:

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - C

23. यदि समाज के सभी वर्गों का जीवन स्तर ऊँचा होता है, तो इसे कहेंगे

(A) सतत विकास

(B) समावेशी विकास

(C) आर्थिक वृद्धि

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

24. आर्थिक विकास क्या है?

(A) स्वचालित होनेवाली प्रक्रिया

(B) नियोजन की प्रक्रिया

(C) परिवर्तन की प्रक्रिया

PDF SARTHI.COM

(D) परिमार्जन की प्रक्रिया

Ans - C

25. इनमें कौन आधारभूत संरचना नहीं है ?

(A) सड़क

(B) बिजली

(C) पानी

(D) उधोग

Ans - D

26. आर्थिक नियोजन किसके अनुसार होता है ?

(A) देश की प्राथमिकताओं के आधार पर

(B) देश के संसाधनों के आधार पर

(C) गरीबी के स्तर के अनुसार

(घ) इनमें सभी

Ans - C

27. भारत के योजना आयोग का अध्यक्ष होते थे

(A) राष्ट्रपति

PDFSARTHI.COM

(B) प्रधानमंत्री

(C) उपराष्ट्रपति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - B

28. प्रत्येक पंचवर्षीय योजना किसके द्वारा अनुमोदित होती थी?

(A) प्रधानमंत्री द्वारा

(B) राष्ट्रपति द्वारा

(C) राष्ट्रीय विकास परिषद द्वारा

(D) देश की संसद द्वारा

Ans - A

29. प्रथम पंचवर्षीय योजना का काल था

(A) 1950-55

(B) 1947-52

(C) 1951-56

(D) 1952-57

Ans - C

PDF SARTHI.COM

30. प्रतिव्यक्ति राष्ट्रीय आय है

(A) राष्ट्रीय आय ÷ जनसंख्या

(B) सभी व्यक्तियों की आय का योग

(C) जनसंख्या ÷ राष्ट्रीय आय

(D) व्यक्ति ÷ राष्ट्रीय आय

Ans – A

PDF SARTHI.COM

2. राज्य एवं राष्ट्र की आय

1. कुल (सकल) घरेलू उत्पाद क्या है?

उत्तर - किसी देश के सामान्य निवासियों द्वारा अपनी भौगोलिक सीमा के अंतर्गत एक लेखावर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को कुल (सकल) घरेलू उत्पाद कहा जाता है। इसमें देश के नागरिकों तथा गैर-नागरिकों के अंशदान को शामिल किया जाता है। इसका मापन राष्ट्रीय सांख्यिकीय एजेंसी द्वारा किया जाता है। यह किसी भी देश के जीवन स्तर का एक संकेतक होता है।

2. राज्य घरेलू उत्पाद क्या है ?

उत्तर - राज्य घरेलू उत्पाद किसी राज्य में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक या बाजार मूल्य है। दूसरे शब्दों में, यह राज्य की भौगोलिक सीमाओं के अंदर एक लेखावर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य होता है। इसमें प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक तीनों ही क्षेत्रों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य सम्मिलित रहता है। राज्य के इन विभिन्न क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि होने से राज्य की आय में भी वृद्धि होती है। हमारे देश के जिन राज्यों का सकल अथवा कुल राज्य घरेलू उत्पाद अधिक है उन्हें विकसित राज्यों की संज्ञा दी जाती है।

3. "उत्पादन, आय एवं व्यय एक चक्रीय प्रवाह का निर्माण करता है।" स्पष्ट करें।

उत्तर - एक द्विक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था (जिसमें सिर्फ फर्म और परिवार सम्मिलित हों) में उत्पादन का कार्य फर्म, परिवार द्वारा प्रदान की गई भूमि, श्रम, पूँजी तथा साहस की सहायता से होता है। फर्म, परिवार के कार्य के बदले उत्पादन के संसाधनों पर मजदूरी, ब्याज एवं लाभ प्रदान करता है। एक रुपये मूल्य के उत्पादन का अर्थ है एक रुपये के संसाधन को खरीदने के लिए उतने ही मूल्य की आय का सृजन । परिवार इस आय का प्रयोग फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के क्रय पर करता है।

इस तरह, उत्पादन, आय एवं व्यय के चक्रीय प्रवाह का निर्माण होता है, जहाँ कुल आय = कुल व्यय = कुल उत्पादन।

4. कुल राष्ट्रीय उत्पाद से आप क्या समझते हैं?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - किसी देश में एक लेखावर्ष के अंदर जिन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन तथा विनिमय होता है, उनके बाजार मूल्यों को हम कुल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) कहते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि कुल राष्ट्रीय उत्पाद में केवल वे ही वस्तुएँ सम्मिलित हैं, जो उपभोक्ताओं द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अंतिम रूप में उपभोग की जाती हैं। उदाहरण के लिए, कपड़ा अंतिम वस्तु है जिसका उपभोग के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग किया जाता है, किंतु कपास या सूत अंतिम वस्तु नहीं है। इस प्रकार, कुल राष्ट्रीय उत्पाद की जानकारी प्राप्त करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं की गणना केवल एक ही बार होनी चाहिए। दूसरी ध्यान देने की बात यह है कि कुल राष्ट्रीय उत्पाद में केवल चालू वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य ही शामिल रहता है।

5. राष्ट्रीय आय क्या है तथा इसका सृजन किस प्रकार होता है ?

उत्तर - यदि किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों पर श्रम और पूँजी लगाकर उनका उपयोग किया जाता है तो उससे प्रत्येक वर्ष एक निश्चित मात्रा में वस्तुओं और है तथा सेवाओं का उत्पादन होता है। सरल शब्दों में, यह देश की राष्ट्रीय आय है। इस प्रकार, राष्ट्रीय आय एक निश्चित अवधि में देश के संपूर्ण उत्पादन का मौद्रिक मूल्य वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से ही इसका सृजन होता है। आय एक प्रवाह है तथा कुल राष्ट्रीय उत्पादन का प्रवाह ही कुल राष्ट्रीय आय का प्रवाह उत्पन्न करता है। इस प्रकार, कुल राष्ट्रीय आय और कुल राष्ट्रीय उत्पादन दोनों एक-दूसरे के बराबर होते हैं।

भारत की राष्ट्रीय आय एक वर्ष में भारतीयों द्वारा अर्जित वेतन / मजदूरी, लगान, ब्याज एवं लाभ का योग है।

6. सकल राज्य घरेलू उत्पाद तथा शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - राज्य घरेलू उत्पाद का आकलन प्रायः दो आधारों पर किया जाता है सकल राज्य घरेलू उत्पाद तथा शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद । सकल राज्य घरेलू उत्पाद किसी राज्य के भीतर एक लेखावर्ष में उत्पादित समस्त वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य होता है। परंतु, इस सकल राज्य घरेलू उत्पाद को प्राप्त करने में मशीन आदि की घिसावट होती है तथा कुछ व्यय करना पड़ता है। सकल घरेलू उत्पाद में से व्यय के इन मदों को घटाने के बाद जो शेष राशि बच जाती है वह शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद है। राज्य के नागरिकों की प्रतिव्यक्ति आय और उनका जीवन-स्तर मुख्यतः इसी पर निर्भर करता है।

7. कुल राष्ट्रीय उत्पादन और शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - किसी भी देश में एक लेखावर्ष के अंतर्गत जिन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है उनके मौद्रिक मूल्य को कुल राष्ट्रीय उत्पादन कहते हैं। लेकिन, इस कुल राष्ट्रीय उत्पादन को प्राप्त करने में कुछ खर्च करना पड़ता है । उत्पादन की क्रिया को जारी रखने के लिए बार-बार चल पूँजी खरीदनी पड़ती है तथा घिसावट के कारण मशीन आदि को बदलना पड़ता है। इस प्रकार, कुल राष्ट्रीय उत्पादन में से व्यय के इन मदों को घटाने के बाद जो शेष बचता है, वह शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन है।

8. बिहार की प्रतिव्यक्ति आय कम होने के क्या कारण हैं? बिहार के किस जिले प्रतिव्यक्ति आय सबसे अधिक और किस जिले की सबसे कम है?

उत्तर - बिहार की गणना देश के सर्वाधिक पिछड़े हुए राज्यों में की जाती है इसकी प्रतिव्यक्ति आय बहुत कम है। इसका प्रधान कारण यहाँ की कृषि की पिछड़ी हुई अवस्था तथा राज्य में उद्योग-धंधों का अभाव है। इसके फलस्वरूप बिहार का राज्य घरेलू उत्पाद बहुत कम है। देश के अन्य राज्यों की तुलना में बिहार में जनसंख्या की वृद्धि दर भी अपेक्षाकृत अधिक है। राज्य की जनसंख्या में 2001-11 की अवधि में 25.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि संपूर्ण भारत के लिए यह वृद्धि दर 17.7 प्रतिशत थी।

बिहार सरकार के 2020-21 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, 2018-19 में पटना जिले की प्रतिव्यक्ति आय सबसे अधिक तथा शिवहर जिले की प्रतिव्यक्ति आय सबसे कम थी।

9. बिहार के राज्य घरेलू उत्पाद में किस क्षेत्र का सर्वाधिक योगदान होता है ? बिहार राज्य की वर्तमान विकास दर क्या है?

उत्तर - बिहार के राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि, उद्योग, व्यापार, संचार, परिवहन आदि विभिन्न क्षेत्रों द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य सम्मिलित रहता है। राज्य के इन सभी क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि होने से राज्य की आय में भी वृद्धि होती है। विगत वर्षों के अंतर्गत बिहार के प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादन में कमी हुई है जिसका प्रमुख कारण कृषि की उपज में गिरावट है। द्वितीयक अथवा औद्योगिक क्षेत्र के उत्पादन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है तथा राज्य के घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्र का सबसे न्यून योगदान होता है। वर्तमान में बिहार के राज्य घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का अंशदान सर्वाधिक है जिसमें संचार सेवाएँ, बैंकिंग तथा व्यापार महत्त्वपूर्ण हैं। 2019-20 की अवधि में बिहार की विकास दर 7.4 प्रतिशत रही है।

10. क्या बिहार की प्रतिव्यक्ति आय में कृषि का योगदान सर्वाधिक है ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - वित्तीय वर्ष 2020-21 में सकल राज्य घरेलू उत्पाद का 20.19 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, पशुपालन, मछलीपालन आदि), 25.92 प्रतिशत द्वितीयक क्षेत्र (उद्योग) एवं 53.89 प्रतिशत तृतीयक क्षेत्र (सेवा, व्यापार, पर्यटन, दूरसंचार एवं अन्य) से प्राप्त हुआ । आँकड़ों से स्पष्ट है कि प्रतिव्यक्ति आय में कृषि का योगदान सर्वाधिक नहीं है। हालाँकि लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। फिर भी, प्रतिव्यक्ति आय का ज्यादा प्रतिशत सेवा क्षेत्र से आता है। किसी राज्य की प्रतिव्यक्ति आय सकल राज्य घरेलू उत्पाद को जनसंख्या से विभाजित करके प्राप्त होता है।

राज्य एवं राष्ट्र की आय

1. आर्थिक विकास से राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय का क्या संबंध है?

उत्तर - राष्ट्रीय आय किसी देश के निवासियों की कुल आय होती है। प्रतिव्यक्ति आय देश के नागरिकों की औसत आय है। कुल राष्ट्रीय आय में कुल जनसंख्या से भाग देने पर जो भागफल आता है, उसे प्रतिव्यक्ति आय कहते हैं। किसी देश के आर्थिक विकास में राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। ये दोनों ही हमारे आर्थिक जीवन, रहन-सहन के स्तर तथा विकास को प्रभावित करते हैं।

आर्थिक विकास का राष्ट्रीय आय से घनिष्ठ संबंध है। किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए राष्ट्रीय आय में वृद्धि आवश्यक है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि उपभोग एवं विनियोग की वस्तुओं में होनेवाली वृद्धि का परिचायक है। उपभोग की वस्तुओं की पूर्ति बढ़ने से लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा होता है। विनियोग की वस्तुएँ आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र बनाने में सहायक होती हैं तथा इससे हमारी भावी उत्पादन क्षमता बढ़ती है। विकास का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि द्वारा देश के नागरिकों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना है। सामान्यतया, राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर देशवासियों की प्रतिव्यक्ति आय भी बढ़ती है। लेकिन, इसके लिए राष्ट्रीय आय का समुचित वितरण आवश्यक है। भारत में राष्ट्रीय आय का वितरण बहुत विषम है तथा इसका एक बड़ा भाग कुछ थोड़े से व्यक्तियों के हाथ में केंद्रित है। इसके फलस्वरूप देश में व्यापक निर्धनता विद्यमान है। अतः, देश के सामान्य नागरिकों की औसत अथवा प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि के लिए राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ ही इसका समुचित वितरण भी आवश्यक है।

2. "राष्ट्रीय आय में वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक है।" विवेचना करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - आज विश्व के सभी अर्द्धविकसित एवं विकासशील देशों का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास की गति को अधिक तीव्र बनाना है। परंतु, आर्थिक विकास से हमारा अभिप्राय क्या है? आर्थिक विकास का राष्ट्रीय आय से घनिष्ठ संबंध है। किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए राष्ट्रीय आय में वृद्धि आवश्यक है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि उपभोग एवं विनियोग की वस्तुओं में होनेवाली वृद्धि का परिचायक है। उपभोग की वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ने से लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा होता है। विनियोग की वस्तुएँ आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र बनाने में सहायक होती हैं तथा इनसे हमारी भावी उत्पादन क्षमता बढ़ती है। भारत में भी विकास का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि द्वारा देश के नागरिकों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है। सामान्यतया, राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर देशवासियों की प्रतिव्यक्ति आय भी बढ़ती है। लेकिन, इसके लिए राष्ट्रीय आय का समुचित वितरण आवश्यक है। हमारे देश में राष्ट्रीय आय का वितरण बहुत विषम है तथा इसका एक बड़ा भाग कुछ थोड़े से व्यक्तियों के हाथ में केंद्रित है। इसके फलस्वरूप, देश में व्यापक निर्धनता विद्यमान है तथा अधिकांश भारतवासियों का जीवन-स्तर बहुत निम्न है। अतः, देश के सामान्य नागरिकों का जीवन-स्तर सुधारने के लिए राष्ट्रीय आय का समुचित वितरण आवश्यक है।

3. राष्ट्रीय आय की गणना का महत्त्व बताएँ।

उत्तर - राष्ट्रीय आय की माप एवं इसका विवेचन निम्नांकित कारणों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

(i) आर्थिक विकास का मापदंड - राष्ट्रीय आय किसी देश के आर्थिक विकास एवं प्रगति का मापदंड होती है। यदि देश के कुल उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो रही है तो सामान्यतः इसका अर्थ यह होगा कि अर्थव्यवस्था विकास की दिशा में अग्रसर है।

(ii) जीवन-स्तर की जानकारी - राष्ट्रीय आय के अध्ययन से देशवासियों के जीवन स्तर की भी जानकारी प्राप्त होती है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर प्रतिव्यक्ति आय बढ़ती है। इसके फलस्वरूप, देशवासियों का जीवन-स्तर भी बढ़ता है।

(iii) अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान - राष्ट्रीय आय के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि कृषि, उद्योग, व्यापार आदि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में क्या परिवर्तन हुए हैं तथा देश की कुल आय में उनका क्या योगदान है।

PDF SARTHI.COM

(iv) समाज में धन का वितरण - राष्ट्रीय आय की गणना से इस बात का भी पता चलता है कि देश में उत्पादित आय एवं संपत्ति का वितरण किस प्रकार हुआ है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर भी यदि समाज में आय का वितरण असमान है तो अधिकांश लोगों के जीवन-स्तर में सुधार नहीं होगा।

(v) आर्थिक नीति-निर्धारण - देश की आर्थिक नीति के निर्धारण में भी राष्ट्रीय आय की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रीय आय की गणना में एकत्र किए जानेवाले आँकड़ों के आधार पर ही सरकार बजट बनाती है।

4. "भारत में कार्यशील जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि पर निर्भर है।" कारण स्पष्ट करें।

उत्तर - भारत की कार्यशील जनसंख्या का व्यावसायिक वितरण हमारे देश की अर्थव्यवस्था का अविकसित रूप प्रकट करता है। अर्द्धविकसित एवं विकासशील देशों को कार्यशील जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग प्राथमिक अथवा कृषि क्षेत्र में लगा होता है तथा औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम होती है। इसका कारण स्पष्ट है। अर्द्धविकसित एवं पिछड़े हुए देश के निवासियों की प्रतिव्यक्ति आय बहुत कम होती है तथा इसका एक बहुत बड़ा भाग खाद्यान एवं अन्य अनिवार्य वस्तुओं पर ही खर्च हो जाता है। परिणामतः, औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र की वस्तुओं के लिए इनकी माँग बहुत कम होती है। पूँजी तथा आधुनिक तकनीक के अभाव में इन देशों का औद्योगिक क्षेत्र बहुत छोटा भी होता है तथा इसमें रोजगार की संभावनाएँ कम होती हैं। विकसित देशों की स्थिति इनसे सर्वथा भिन्न होती है।

भारत की कार्यशील जनसंख्या का अधिकांश (55 प्रतिशत से अधिक) भाग कृषि कार्यों में संलग्न है तथा उद्योग और सेवाओं में इसका एक बहुत छोटा भाग कार्यरत है। हमारे देश के औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र का पूर्ण विकास नहीं होने के कारण ही कार्यशील जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग कृषि एवं इससे संबद्ध क्रियाकलापों द्वारा जीवनयापन करने के लिए बाध्य है।

2.राज्य एवं रास्ट्र की आय

1. जिस देश की राष्ट्रीय आय अधिक होती है वह देश क्या कहलाता है?

(A) अविकसित

(B) विकसित

PDFSARTHI.COM

(C) अर्द्धविकसित

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (B)

2. निम्नलिखित में से कौन-सा देश विकसित अर्थव्यवस्था का उदाहरण है?

(A) नेपाल

(B) बांग्लादेश

(C) ब्रिटेन

(D) श्रीलंका

Ans: (C)

3. भूमि का पारिश्रमिक उसकी आय के रूप में क्या प्रकट करता है?

(A) मजदूरी

(B) लगान

(C) ब्याज

(D) वेतन

Ans: (B)

4. भारत में गरीबी रेखा से नीचे रहनेवालों की संख्या है –

(A) 26.8

(B) 27.8

(C) 28.8

PDF SARTHI.COM

(D) 29.8

Ans: (D)

5. बिहार में कुल घरेलू उत्पाद कितना प्रतिशत है?

(A) 8.03

(B) 9.03

(C) 11.03

(D) 10.03

Ans: (C)

6. इनमें से कौन एक बीमारू राज्य नहीं है?

(A) बिहार

(C) कर्नाटक

(B) मध्यप्रदेश

(D) उड़ीसा

Ans: (C)

7. ऊँची विकास दर से

(A) तेजी से समृद्धि होती है

(B) गरीबी दूर होती है

(C) देश विकसित देश की श्रेणी में आ जाता है

(D) 'A' और 'B' दोनों

PDF SARTHI.COM

Ans: (D)

8. बिहार की प्रति व्यक्ति आय देश भर में

(A) न्यूनतम है

(B) औसत से अधिक है

(C) अधिकतम है

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (A)

9. बिहार के किस जिले का प्रतिव्यक्ति आय सर्वाधिक है?

(A) पटना

(B) शिवहर

(C) गया

(D) नालंदा

Ans: (A)

10. बिहार में सबसे कम प्रति व्यक्ति आय वाला जिला है -

(A) वैशाली

(B) शिवहर

(C) सारण

(D) पटना

Ans: (B)

PDFSARTHI.COM

11. केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार बिहार की आय में वृद्धि कितना प्रतिशत हुई है?

(A) 11.03%

(B) 10%

(C) 08%

(D) 09%

Ans: (A)

12. भारत में किस राज्य का प्रति व्यक्ति आय सर्वाधिक है?

(A) बिहार

(B) पंजाब

(C) गोवा

(D) हरियाणा

Ans: (C)

13. 2009-10 के अनुसार बिहार की प्रतिव्यक्ति आय है -

(A) 7,875 रु०

(B) 16,119 रु०

(C) 13,211 रु०

(D) 15,254 50

Ans: (B)

14. सन् 2012-13 में भारत की औसत आय प्रतिव्यक्ति थी।

PDF SARTHI.COM

(A) 49.489万。

(B) 41,964 रु

(C) 59,822 रु०

(D) 68,757 रु०

Ans: (D)

15. सन् 2008-2009 के अनुसार भारत की औसत प्रति व्यक्ति आय कितनी बताई गई थी?

(A) 22.553 रु०

(B) 25,494 रु०

(C) 6,610 रु०

(D) 54,850 रु०

Ans: (B)

16. भारत में सबसे कम आय वाला राज्य कौन है?

(A) गोवा

(B) महाराष्ट्र

(C) बिहार

(D) पंजाब

Ans: (C)

17. बिहार की आय में सर्वाधिक योगदान होता है-

(A) औद्योगिक क्षेत्र का

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

(B) कृषि क्षेत्र का

(C) सेवा क्षेत्र का

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (C)

18. बिहार राज्य में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की संख्या का प्रतिशत है -

(A) 41.4

(B) 54.4

(C) 64.4

(D) 70,4

Ans: (A)

19. बिहार राज्य की कितनी प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है?

(A) 80%

(B) 86%

(C) 70%

(D) 62%

Ans: (B)

20. "एक देश इसलिए गरीब है क्योंकि वह गरीच है।" किस अर्थशास्त्री का कथन है?

(A) प्रो० विन्सोलो

(B) मो० यूनुस

PDF SARTHI.COM

(C) अमर्त्यसेन

(D) रेगनर नर्क्स

Ans: (D)

21. सन् 2012-2013 में बिहार में प्रतिव्यक्ति आय थी।

(A) 28.317 रु०

(B) 26.455 रु०

(C) 59.822 रु०

(D) 68,757 रु०

Ans: (D)

22.गरीबी के कुचक्र को किसने परिभाषित किया है।

(A) रैगनर नर्क्स

(B) प्रो० केन्स

(C) प्रो० फिशर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (A)

23. निम्न में से कौन-सा भारतीय राज्य गरीवी कुचक्र का शिकार है?

(A) केरल

(B) कर्नाटक

(C) बिहार

PDF SARTHI.COM

(D) हरियाणा

Ans: (C)

24. भारत में वित्तीय वर्ष होता है -

(A) 1 जनवरी से 31 दिसंबर तक

(B) 1 जुलाई से 30 जून तक

(C) 1 अप्रैल से 31 मार्च तक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (C)

25. राष्ट्रीय आय का सृजन होता है

(A) विनिमय द्वारा

(B) उत्पादक क्रियाओं द्वारा

(C) वितरण द्वारा

(D) उपभोग द्वारा

Ans: (B)

26. राष्ट्रीय आय निम्न में से किससे संबंधित है?

(A) उपभोग एवं जीवन स्तर में सुधार में

(B) बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन से

(C) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से

(D) इनमें सभी

PDF SARTHI.COM

Ans: (D)

27. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना के अनुमानों क कितने वर्गों में बाँटा गया है?

(A) दो

(B) तीन

(C) चार

(D) पाँच

Ans: (A)

28. राष्ट्रीय आय में सम्मिलित है-

(A) घरेलू उद्योगों की आय

(B) विदेशों से प्राप्त आय

(C) 'A' और 'B' दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (C)

29. राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से प्रति व्यक्ति में ....होती है।

(A) कमी

(B) वृद्धि

(C) स्थिर

(D) संतुलन

PDF SARTHI.COM

Ans: (B)

30. राष्ट्रीय आय का अर्थ है-

(A) सरकार की आय

(B) परिवार को आय

(C) सार्वजनिक उपक्रमों की आय

(D) उत्पादक के साधनों की आय

Ans: (D)

31. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना कब प्रारंभ की गई?

(A) 1950-51

(B) 1951-52

(C) 1953-54

(D) 1955-56

Ans: (B)

32. भारत का राष्ट्रीय आय का सर्वप्रथम अनुमान लगाया था|

(A) प्रो० देशमुख ने

(B) जवाहरलाल नेहरू ने

(C)प्रो० महालनोविस ने

(D) दादाभाई नौरोजी ने

Ans: (D)

PDF SARTHI.COM

33. राष्ट्रीय आय समिति का गठन किस वर्ष हुआ था?

(A) 1950

(B) 1949

(C) 1948

(D) 1960

Ans: (B)

34. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए सर्वमान्य प्रमाणित संस्था है -

(A) राष्ट्रीय विकास परिषद

(B) केन्द्रिय सांख्यिकी संगठन

(C) नीति (योजना) आयोग

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (B)

35. केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन की स्थापना की गई है -

(A) 1951

(C) 1969

(B) 1950

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (A)

36. तीसा की भयानक आर्थिक मंदी की अवधि क्या थी?

PDF SARTHI.COM

(A) 1920-30

(B) 1929-33

(C) 1918-25

(D) 1998-2009

Ans: (B)

37. दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक में भारत की प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय (सन् 1868 में) कितना होने का अनुमान लगाया था?

(A) 10 रुपये

(B) 20 रुपये

(C) 50 रुपये

(D) 80 रुपये

Ans: (B)

38. दादा भाई नौरोजी ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय का अनुमान कब लगाया था?

(A) 1866 to

(B) 1968 ई०

(C)1878 to

(D) 1998

Ans: (A)

39. 2013-14 में भारत की प्रतिव्यक्ति औसत आय थी-

PDF SARTHI.COM

(A) 41.964 रु०

(B) 49.489 रु०

(C) 90.388 रु०

(D) 60.822 रु०

Ans: (C)

40. "पोवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया" किनकी रचना है?

(A) प्रो० केन्स

(B) प्रो० पी० सी० महालनोबिस

(C) प्रो० जोन्स

(D) दादाभाई नौरोजी

Ans: (D)

41. तीसा की भयानक आर्थिक मंदी से उबारने के लिए किसने सुझाव दिया था?

(A) प्रो० केन्स

(B) माल्थस

(C)अमर्त्य सेन

(D) दादा भाई नौरोजी

Ans: (A)

42. आय तथा उपभोग का अंतर :

(A) विनियम कहलाता है

PDF SARTHI.COM

(B) मुद्रा कहलाता है

(C) बचत कहलाता है

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (C)

43. भारत की राष्ट्रीय आय का सर्वप्रथम अनुमान किसने लगाया?

(A) महात्मा गाँधी

(B) जाल नेहरू

(C) सरदार पटेल

(D) दादाभाई नौरोजी

Ans: (D)

44. प्रतिव्यक्ति आय द्वारा किसी देश की .... का पता लगाया जा सकता है।

(A) आर्षिक आय

(B) अर्थिक सम्पन्नता

(C) घरेलू उत्पाद

(D) विकास दर

Ans: (B)

45. नये आँकड़ों के अनुसार अमेरिका का प्रति व्यक्ति आय है-

(A) 46,040 डॉलर

(B) 42,740 डॉलर

PDF SARTHI.COM

(C) 2,360 डॉलर

(D) 870 डॉलर

Ans: (C)

46. प्रति व्यक्ति आय का आशय है:

(A) सम्पूर्ण आय

(B) औसत आय

(C) राष्ट्रीय आय

(D) सीमान्त आय

Ans: (C)

47. निम्नांकित में कौन हमारे रहन-सहन के स्तर को प्रभावित करता है?

(A) राजकीय आप

(B) राष्ट्रीय आप

(C) प्रति व्यक्ति आय

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (C)

48. किसी राज्य के नागरिकों का जीवन स्तर निर्भर करता है

(A) शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद पर

(B) सकल घरेलू राज्य उत्पाद पर

(C) 'A' एवं 'B' दोनों

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans: (B)

49. राष्ट्रीय आय जाना जाता है -

(A) उत्पादन गणना विधि से

(B) आय गणना विधि से

(C) व्यावसायिक गणना विधि से

(D) उपरोक्त सभी के द्वारा

Ans: (D)

50. उत्पादन एवं आय गणना विधि आर्थिक दृष्टिकोण से हैं

(A) सहज

(B) वैज्ञानिक

(C) व्यवहारिक

(D) उपर्युक्त तीनों

Ans: (D)

51. राष्ट्रीय आय की गणना की कितनी विधियाँ है?

(A) चार

(B) पाँच

(C) तीन

(D) सात

PDF SARTHI.COM

Ans: (B)

52. समावेशी आर्थिक विकास क्या है?

(A) संतुलित विकास

(B) समाज के गरीब वर्ग का विकास

(C) समाज के पिछड़े वर्ग का विकास

(D) इनमें सभी

Ans: (D)

53. समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर के ऊँचा होने को कहते हैं

(A) आर्थिक विकास

(B) आर्थिक वृद्धि

(C) सतत विकास

(D) समावेशी विकाम

Ans: (D)

54. राष्ट्रीय आप के सूचकांक में वृद्धि होने से लोगों के किस विकास में वृद्धि होगी

(A) सामाजिक विकास

(B) आर्थिक विकास

(C) राजनीतिक विकास

(D) सांस्कृतिक विकास

Ans: (B)

PDF SARTHI.COM

3. मुद्रा, बचत एवं साख

1. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से आप क्या समझते हैं? मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या का कैसे समाधान करती है ?

उत्तर - मुद्रा के आविष्कार के पूर्व वस्तु-विनिमय प्रणाली का प्रचलन था। इस प्रणाली में लोग विनिमय में अपनी वस्तुओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान करते थे। लेकिन, वस्तु - विनिमय के अंतर्गत कम-से-कम ऐसे दो व्यक्तियों में संपर्क होना आवश्यक है जिनके पास एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति की वस्तुएँ हैं। इसे आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है। परंतु, वास्तविक जीवन में इस प्रकार का संयोग होना अत्यंत कठिन है। मुद्रा के प्रयोग से यह कठिनाई दूर हो गई है। आज सभी वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय मुद्रा के माध्यम से होता है।

2. मुद्रा मूल्य-मापन का कार्य कैसे करती है ?

उत्तर - आधुनिक अर्थव्यवस्था में हर वस्तु का मूल्य मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है। जैसे पचास रुपये किलोग्राम संतरा, पचीस रुपये दर्जन केला, चार हजार रुपये का मोबाइल, दस रुपये का बिस्कुट आदि । हर वस्तु अथवा सेवा का मूल्य रुपये में मापा और व्यक्त किया जाता है।

3. साख के गुण या लाभ बताएँ ।

उत्तर - आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के संचालन में साख की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसने पूँजी को गतिशीलता प्रदान कर उद्योग और व्यापार के विकास में अभूतपूर्व योगदान किया है। साख के प्रचलन से पूँजी की उत्पादकता में वृद्धि होती है। साख द्वारा बैंकों अथवा लोगों के पास जमा धन ऐसे व्यक्तियों के पास पहुँच जाता है, जो इसका प्रयोग उत्पादक कार्यों में करते हैं। साख का प्रयोग होने से अधिकांश लेन-देन चेक आदि साख-पत्रों के माध्यम से होते हैं। इससे मुद्रा की आवश्यकता घट जाती है। साख-पत्रों का लेन-देन अधिक सुविधाजनक भी होता है। साख बचत एवं पूँजी निर्माण को भी प्रोत्साहित करती है।

4. साख- मुद्रा का सृजन किसके द्वारा किया जाता है?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - साख-मुद्रा का सृजन देश के व्यावसायिक बैंकों के द्वारा किया जाता है। बैंकों द्वारा दिए गए ऋण से साख का सृजन होता है। ऋण खाते में प्राप्त मुद्रा का प्रयोग कोई व्यक्ति क्रय की गई वस्तु की मूल्य अदायगी के लिए कर सकता है। चेक तथा हुंडी साख-पत्र मुद्रा का कार्य करते हैं।

5. पत्र - मुद्रा क्या है ? भारत में इसे कौन जारी करता है?

उत्तर - पत्र - मुद्रा एक विशेष प्रकार के कागज पर लिखा हुआ प्रतिज्ञा-पत्र है जिसमें निर्गमन अधिकारी माँग करने पर उसमें अंकित राशि देने का वचन देता है। भारत में एक रुपया का नोट भारत सरकार द्वारा और इसको छोड़कर अन्य सभी प्रकार के नोट रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा जारी किए जाते हैं।

6. साख-पत्र क्या है ? कुछ प्रमुख साख-पत्रों का उल्लेख करें।

उत्तर - साख-पत्रों से अभिप्राय उन पत्रों या साधनों से होता है जिनका साख- मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता है। इन पत्रों के आधार पर ऋणों का आदान-प्रदान तथा वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय होता है। एक आधुनिक अर्थव्यवस्था के संचालन में साख-पत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है तथा अधिकांश व्यापारिक लेन-देन इन्हीं के माध्यम से होते हैं। वास्तव में, मुद्रा नहीं होने पर भी साख पत्र मुद्रा के कार्यों का ही संपादन करते हैं। साख-पत्र एक प्रकार का लिखित प्रतिज्ञा - पत्र होता है। इसे लिखनेवाला व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति अथवा उसके द्वारा आदेशित व्यक्ति या वाहक को तत्काल अथवा एक निश्चित अवधि के पश्चात साख पत्र में उल्लेख की गई रकम अदा करने का वादा करता है। साख-पत्रों के कई प्रकार हैं जिनमें चेक, बैंक ड्राफ्ट, यात्री चेक, हुंडी या वादा-पत्र प्रमुख हैं।

7. बचत क्या है ?

उत्तर - बचत आय का वह भाग है जिसका वर्तमान में उपभोग नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की मासिक आय 20,000 रुपये है जिसमें से यदि 15,000 रुपये वह वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग पर खर्च करता है तो शेष 5,000 रुपये उसकी बचत है। सूत्र के रूप में कुल आय - उपभोग व्यय = बचत है। बचत से सृजित पूँजी का निवेश उद्योग, व्यापार तथा अन्य उत्पादक क्रियाओं में किया जाता है।

8. किसी व्यक्ति की बचत करने की इच्छा किन बातों से प्रभावित होती है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - किसी व्यक्ति की बचत करने की इच्छा कई बातों से प्रभावित होती है। वही व्यक्ति बचत कर सकता है जिसकी आय उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति से अधिक है। साथ ही, उस व्यक्ति में बचत करने की इच्छा भी होनी चाहिए। इतना ही नहीं, बचत के लिए अनुकूल वातावरण का होना नितांत आवश्यक है। गृहयुद्ध, बाह्य आक्रमण की संभावना तथा संपत्ति के असुरक्षित रहने का खयाल आते ही व्यक्ति में बचत करने की इच्छा बहुत कम हो जाती है।

9. मुद्रा की परिभाषा दीजिए।

उत्तर - मुद्रा विनिमय का माध्यम है तथा विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इसकी अलग-अलग परिभाषा दी है। रॉबर्टसन के अनुसार, "मुद्रा वह वस्तु है जिसे वस्तुओं का मूल्य चुकाने तथा अन्य प्रकार के व्यावसायिक दायित्वों को निबटाने के लिए व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।" मार्शल ने मुद्रा की परिभाषा देते हुए बताया है, "मुद्रा में वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं, जो बिना संदेह अथवा विशेष जाँच के वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने तथा खर्चों को चुकाने में साधारणतया प्रचलित रहती हैं। " परंतु, विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई मुद्रा की परिभाषाओं में हार्टले विदर्स की परिभाषा सबसे सटीक है। इनके अनुसार, "मुद्रा वह है, जो मुद्रा का कार्य करती हो।

10. "मुद्रा आधुनिक अर्थतंत्र की धुरी है।" विवेचना कीजिए ।

उत्तर - हमारी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा के प्रयोग से उपभोग, उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा राजस्व अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र को बहुत लाभ हुआ है। यह उपभोक्ताओं को अपनी सीमित आय के द्वारा अधिकतम संतोष प्राप्त करने में सहायता करती है। उत्पादकों को भी मुद्रा से अनेक लाभ हुए हैं। मुद्रा के अभाव में बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव नहीं था। आज मुद्रा विनिमय का सर्वमान्य साधन है तथा इसके प्रयोग से वस्तुओं का मूल्य निर्धारण एवं क्रय-विक्रय का कार्य अत्यंत सरल हो गया है। मुद्रा के रूप में सरकार को कर आदि लगाने में भी सुविधा होती है। इस प्रकार, मार्शल ने ठीक ही कहा है कि मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों और संपूर्ण अर्थविज्ञान घूमता है।

मुद्रा, बचत एवं साख

1. वस्तु-विनिमय प्रणाली की प्रमुख समस्या क्या थी? मुद्रा ने इस समस्या को कैसे दूर किया?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - मुद्रा के आविष्कार के पूर्व वस्तु-विनिमय प्रणाली का प्रचलन था। इस प्रणाली के अंतर्गत लोग विनिमय में अपनी वस्तुओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान करते थे; जैसे-चावल देकर जुलाहे से कपड़ा लेना, गेहूँ से जूते का विनिमय करना इत्यादि। परंतु, वस्तु-विनिमय, अर्थात वस्तुओं के प्रत्यक्ष आदान-प्रदान में अनेक कठिनाइयाँ और असुविधाएँ थीं। इनमें सबसे प्रमुख आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कठिनाई थी। वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत कम-से-कम ऐसे दो व्यक्तियों में संपर्क होना आवश्यक है जिनके पास एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति की वस्तुएँ हों। उदाहरण के लिए, मान लें कि एक किसान अपने गेहूँ के बदले कपड़ा लेना चाहता है। इस स्थिति में उसे एक ऐसे व्यक्ति की खोज करनी होगी जिसके पास कपड़ा हो और वह अपने कपड़े के बदले में गेहूँ लेना चाहता हो। इसे आवश्यकताओं का दोहरा संयोग कहा जाता है। परंतु, वास्तविक जीवन में इस प्रकार का संयोग होना बहुत कठिन है। संभव है कि जिस व्यक्ति के पास कपड़ा हो उसे गेहूँ की जरूरत नहीं हो। ऐसी अवस्था में इन दोनों के बीच विनिमय, अर्थात वस्तुओं का आदान-प्रदान संभव नहीं होगा।

इस प्रकार, वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना अनिवार्य है। इस प्रणाली में विनिमय उसी अवस्था में संभव है जब दो व्यक्तियों की आवश्यकताएँ एक-दूसरे से मिलती हो। मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है तथा इसके प्रयोग से यह कठिनाई दूर हो गई है। मुद्रा या मौद्रिक विनिमय प्रणाली में कोई भी व्यक्ति अपनी वस्तु को बेचकर मुद्रा प्राप्त कर लेता है और उससे अपनी आवश्यकतानुसार विभिन्न वस्तुओं का क्रय करता है।

2. वस्तु-विनिमय प्रणाली की कमियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - वस्तु-विनिमय प्रणाली पुरातनकाल में प्रचलित थी, परंतु इस प्रणाली में निम्नलिखित कमियाँ थीं।

(i) दोहरे संयोग का अभाव - वस्तु-विनिमय प्रणाली में क्रेता एवं विक्रेता की जरूरतों में मेल आवश्यक था। इसे दोहरा संयोग कहते हैं। इसके अभाव में विनिमय संभव नहीं था। यदि आपको चावल चाहिए और देने के लिए आपके पास शहद है, तो आपको ऐसे ग्राहक की खोज करनी होगी जो शहद चाहता हो और बदले में चावल देने के लिए तैयार हो। क्रेता को ऐसे दोहरे संयोग के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती थी।

(ii) मूल्य के समान मापक का अभाव - यह स्पष्ट नहीं होता था कि एक बोरा चावल के बदले कितना शहद दिया जाए या एक गाय का मूल्य कितनी टोकरी फल के बराबर होगा। ऐसे में कोई निर्णय करना दुष्कर कार्य था।

PDF SARTHI.COM

(iii) मूल्य-संचय का अभाव - लोगों का उत्पादन ही उनका धन था। इससे वे अन्य वस्तुओं का क्रय करते थे। किंतु, ये उत्पादन शीघ्र नष्ट होनेवाले होते थे; जैसे-फल, सब्जी, गेहूँ, दूध, शहद आदि। अतः, मूल्य-संचय इन स्वरूपों में नहीं किया जा सकता था।

(iv) विभाजन का अभाव - यदि किसी उपभोक्ता को एक गाय के बदले चार वस्तुएँ खरीदनी होती थीं, तो वह विनिमय के लिए गाय के चार टुकड़े नहीं कर सकता था।

(v) भविष्य में भुगतान की असुविधा - मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने एक क्विंटल चावल ऋण के रूप में लिया। ऋण की शर्त के अनुसार, वह सवा क्विंटल चावल एक वर्ष पश्चात लौटाएगा। ऋणदाता समय अवधि समाप्त हो जाने के बाद असंतुष्ट रहता था, क्योंकि मानक के अभाव में उसे कम गुणवत्ता वाला सवा क्विंटल चावल लौटाया गया।

3. मुद्रा से आप क्या समझते हैं? मुद्रा के क्या कार्य हैं?

उत्तर - मुद्रा वह वस्तु है जो विनिमय के माध्यम एवं मूल्य-मापन का कार्य करती है तथा जिसके रूप में धन या संपत्ति का संचय किया जाता है। एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों का संपादन करती है। इसके मुख्य कार्य निम्नांकित हैं।

(i) विनिमय का माध्यम - वस्तु-विनिमय में अनेक कठिनाइयाँ और असुविधाएँ होती हैं। मुद्रा के प्रयोग से विनिमय का कार्य अत्यंत सरल हो जाता है। यह विनिमय के माध्यम का कार्य करती है।

(ii) मूल्य को मापने का साधन - मुद्रा का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य को मापना है। मुद्रा मूल्य का मापक है। वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न वस्तुओं के बीच विनिमय का अनुपात निश्चित करना अत्यंत कठिन था। मुद्रा के प्रयोग से यह कठिनाई दूर हो गई है। अब प्रत्येक वस्तु का मूल्य मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है। मुद्रा मूल्य को मापने में इकाई का कार्य करती है।

(iii) मूल्य का संचय - अन्य वस्तुओं की अपेक्षा मुद्रा के रूप में मूल्य अथवा संपत्ति का संचय करना अधिक सरल है। वस्तुओं के रूप में संपत्ति का संचय असंभव-सा है, क्योंकि वस्तुएँ शीघ्र नष्ट हो जा सकती हैं। वस्तुओं का संचय करने के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता होती है तथा उनकी देखरेख में भी कठिनाई होती है। मूल्य अथवा धन के संचय के लिए मुद्रा अधिक उपयुक्त है।

PDFSARTHI.COM

(iv) विलंबित भुगतान का मान - मुद्रा विलंबित भुगतान का बड़ा ही सुंगम साधन है। वस्तुओं या सेवाओं के रूप में ऋण, अर्थात उधार लेने और देने का कार्य बहुत असुविधाजनक है। मुद्रा के प्रयोग से ऋण लेने और उसका भुगतान करने में बहुत आसानी हो गई है।

4. मुद्रा के विकास का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर - मुद्रा के आविष्कार के पूर्व व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था। लेकिन, वस्तु-विनिमय प्रणाली में कई कठिनाइयाँ थीं तथा इन कठिनाइयों ने ही मुद्रा को जन्म दिया। परंतु, मुद्रा का आविष्कार अचानक नहीं हुआ तथा समय-समय पर मुद्रा के रूप में अनेक वस्तुओं का प्रयोग किया गया। आखेट युग में जानवरों की खाल या चमड़े का, पशुपालन युग में गाय, बैल आदि पशुओं का तथा कृषि युग में कृषि पदार्थों का मुद्रा के रूप में उपयोग किया गया, जिसे वस्तु-मुद्रा की संज्ञा दी गई थी। परंतु, वस्तु-मुद्रा में अनेक दोष थे। वस्तुओं को अधिक समय तक संचित नहीं किया जा सकता, उनमें वहनीयता का अभाव होता है तथा उनके विभाजन में भी कठिनाई उत्पन्न होती है। अतः, मनुष्य ने एक ऐसे मुद्रा-पदार्थ की खोज प्रारंभ की जिनमें उपर्युक्त दोष नहीं हों। धातुओं में ये दोष नहीं थे, इसलिए मुद्रा के विकास के इस चरण में धातुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। विभिन्न देशों में तथा विभिन्न अवसरों पर लोहा, ताँबा, पीतल, सोना, चाँदी आदि प्रायः सभी धातुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया गया है। लेकिन, अन्य धातुओं की अपेक्षा सोना और चाँदी मुद्रा के लिए अधिक उपयुक्त थे।

प्रारंभ में सोना और चाँदी के टुकड़ों का ही मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था। लेकिन, इसमें बहुत असुविधा थी, क्योंकि प्रत्येक लेन-देन में उनकी शुद्धता की जाँच करनी पड़ती थी और उनका वजन लेना पड़ता था। अतएव, लोगों ने एक निश्चित वजन, आकार एवं शुद्धता के बने हुए सिक्कों का प्रयोग प्रारंभ किया। यह मुद्रा के विकास का अगला चरण था। इन सिक्कों में एकरूपता लाने के लिए बाद में चलकर सरकार ने इनकी ढलाई का एकाधिकार अपने हाथ में ले लिया।

परंतु, कालांतर में उद्योग एवं व्यापार में विकास के साथ-साथ मुद्रा की आवश्यकताओं में भी बहुत वृद्धि हुई। धातुओं की पूर्ति सीमित होने के कारण इस बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में कठिनाई होने लगी। अतः, धातु-मुद्रा के स्थान पर पत्र-मुद्रा का आविष्कार हुआ तथा वर्तमान समय में प्रायः सभी देशों में पत्र-मुद्रा का विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है।

5. मुद्रा के मुख्य दोष क्या हैं?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - मुद्रा एक अमिश्रित वरदान नहीं है। जहाँ मुद्रा से समाज को अनेक लाभ हुए हैं वहीं इससे क्षति भी हुई है। मुद्रा के मुख्य दोष निम्नांकित हैं।

(i) मूल्य में अस्थिरता - मुद्रा का एक प्रमुख दोष इसके मूल्य में होनेवाला परिवर्तन है। मुद्रा के मूल्य में होनेवाले तीव्र एवं अचानक परिवर्तनों का हमारी अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, उपभोक्ताओं के जीवन-स्तर, उद्योग, व्यवसाय तथा व्यापार में भी उतार-चढ़ाव उत्पन्न होते हैं। इससे समाज की अपार क्षति होती है।

(ii) आय और धन के वितरण में असमानता - मुद्रा के कारण समाज में संपत्ति का वितरण भी प्रभावित होता है। उत्पादन के साधन कुछ ही लोगों के पास एकत्र हो जाते हैं जिससे समाज में आय और धन के वितरण की विषमता बढ़ती है। मुद्रा ने ही समाज को धनी और निर्धन, दो वर्गों में विभाजित कर दिया है।

(iii) व्यापार-चक्रों की उत्पत्ति - मुद्रा के प्रयोग से व्यापार के क्षेत्र में तेजी और मंदी की सृष्टि होती है, जिसे व्यापार-चक्र कहते हैं। व्यापार-चक्र के कारण बचत और विनियोग की मात्रा में होनेवाले परिवर्तन हैं। बचत तथा विनियोग दोनों ही मुद्रा से संबंधित हैं।

(iv) ऋणग्रस्तता में वृद्धि - मुद्रा ने उधार लेने और देने के कार्य को सरल बना दिया है। इससे लोगों को ऋण लेने में प्रोत्साहन मिलता है। परिणामस्वरूप, समाज में ऋणग्रस्तता की मात्रा में वृद्धि हुई है।

6. मुद्रा के मुख्य लाभ क्या हैं? वर्णन करें।

उत्तर - हमारी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा के मुख्य लाभ निम्नांकित हैं।

(i) उपभोक्ता को लाभ - मुद्रा के रूप में आय प्राप्त होने पर कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा एवं सुविधानुसार उसे खर्च कर सकता है। मुद्रा के द्वारा क्रय-शक्ति ऐसे रूप में होती है जिसका हम जिस प्रकार चाहें, उपयोग कर सकते हैं। यह उपभोक्ताओं को अपनी सीमित आय से अधिकतम संतोष प्राप्त करने में सहायता करती है।

(ii) उत्पादकों को लाभ - उत्पादकों को भी मुद्रा से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। मुद्रा के प्रयोग से ही आज बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ है। उत्पादकों को मुद्रा के द्वारा उत्पादन के विभिन्न साधनों को जुटाने, कच्चा माल खरीदने, श्रमिकों को पारिश्रमिक देने तथा पूँजी उधार लेने में बहुत आसानी हो गई है।

PDFSARTHI.COM

(iii) विनिमय के क्षेत्र में लाभ - मुद्रा के आविष्कार से वस्तु-विनिमय प्रणाली की सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं। मुद्रा विनिमय का सर्वमान्य साधन है।

(iv) वितरण के क्षेत्र में लाभ - वर्तमान समय में वस्तुओं का उत्पादन कई साधनों के सहयोग से होता है। उत्पादन के विभिन्न साधनों की सीमांत उत्पादकता को मापने का कार्य मुद्रा के द्वारा ही होता है। इन साधनों का पुरस्कार या पारिश्रमिक भी मुद्रा के रूप में दिया जाता है। इस प्रकार, मुद्रा राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायता करती है।

(v) राजस्व के क्षेत्र में लाभ - मुद्रा से राजस्व के क्षेत्र में भी बहुत सहायता मिलती है। सरकार करों के रूप में जनता से आय प्राप्त करती है और इसे लोककल्याण के कार्यों पर खर्च करती है। मुद्रा के प्रयोग से ये दोनों ही कार्य सरल हो जाते हैं।

1. आधुनिक युग को प्रगति का श्रेय मुद्दा कोह है यह कथन किसका है ?

(A) ट्रेस्कॉट

(B) मार्शल

(C) क्राउधर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

2. मुद्रा का प्राथमिक कार्य है -

(A) मूल्य का हस्तांतरण

(B) विनिमय का माध्यम

(C) विलचित भुगतान का मान

(D) मूल्य का संचय

Ans - (B)

PDF SARTHI.COM

3. मुद्रा के कार्य हैं -

(A) मापन

(B) संचय

(C) भुगतान

(D) इनमें सभी

Ans - (D)

4. इनमें से कौन मुद्रा के कार्य नहीं हैं?

(A) माध्यम

(B) मापन

(C) भुगतान

(D) लेखन एवं संपादन/उत्पादन

Ans - (D)

5. मुद्रा का प्राथमिक कार्य कौन-सा है?

(A) मूल्य का संचय

(B) विलंबित भुगतान का मान

(C) मूल्य का हस्तांतरण

(D) विनिमय का माध्यम

Ans - (D)

6. बांग्लादेश की मुद्रा का क्या नाम है?

PDFSARTHI.COM

(A) रुपया

(B) डॉलर

(C) टका

(D) दीनार

Ans - (C)

7. सभ्यता के प्रारम्भिक अवस्था में मुद्रा का प्रयोग निम्न में से किस-किस रूप में होता था?

(A) गेहूँ

(B) गाय

(C) भुगतान पत्र

(D) A एवं B दोनों

Ans - (D)

8. इनमें से कौन - सी मुद्रा संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचलित है?

(A) रियाल

(B) दिनार

(C) पाण्ड

(D) डॉलर

Ans - (D)

9. वस्तु - विनिमय प्रणाली की मुख्य कठिनाई थी -

(A) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव

PDF SARTHI.COM

(B) मूल्यमापन की कठिनाई

(C) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

10. निम्न में से किस प्रणाली के अंतर्गत आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव होता है?

(A) मुद्रा प्रणाली

(B) वस्तु-विनिमय प्रणाली

(C) दोनों में

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

11. प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य का व्यापार किस पर आधारित था?

(A) साख

(B) वस्तु विनिमय

(C) धातु मुद्रा

(D) मोल-जोल

Ans - (B)

12. विनिमय के कितने रूप हैं?

(A) दो

(B) तीन

PDF SARTHI.COM

(C) चार

(D) इनमें कोई नहीं

Ans - (A)

13. 'रुपया' किस देश की मुद्रा है?

(A) भारत

(C) नेपाल

(B) पाकिस्तान

(D) इनमें से सभी

Ans - (D)

14. विनिमय का सर्वोच्च माध्यम है

(A) वस्तु

(B) चेक

(C) मुद्रा

(D) प्रतिज्ञापत्र

Ans - (C)

15. वस्तु विनिमय प्रणाली की निम्न में से कौन-सी कठिनाइयों हैं?

(A) वस्तु विभाजन में कठिनाई

(B) सर्वमान्य मूल्य मापक का अ

(C) दोहरे संयोग का अभाव

PDF SARTHI.COM

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (D)

16. प्राचीन युग में विनिमय की कौन सी प्रथा प्रचलित थी?

(A) वस्तु विनिमय

(B) मौद्रिक विनिमय

(C) A और B दाना

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

17. विनिमय के कौन से रूप है?

(A) वस्तु विनिमय

(B) मौद्रिक चिनिय

(C) A और B दाना

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

18. "मुद्रा वह है जो मूल्य का मापक और का साधन हैं।" यह किसका कथन है?

(A) सेलिगमैन

(B) कोलबर्न

(C) क्राउथर

(D) नैप का

PDF SARTHI.COM

Ans - (B)

19. निम्न में से कौन-सा मुद्रा का एक आधुनिक रूप नहीं है?

(A) मुद्रा

(B) जमा

(C) ड्राफ्ट

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

20.प्राचीन काल में किस धातु का मुद्रा के का सर्वाधिक प्रयोग हुआ?

(A) लोहा का

(B) ताँबा का

(C) पीतल का

(D) चाँदी और सोना

Ans - (D)

21. हमारे देश में किस मुद्रा को वैधानिक मान्दर प्राप्त है?

(A) वस्तु मुद्रा

(B) साख-मुद्रा

(C) पत्र-मुद्रा

(D) चेक

Ans - (C)

PDF SARTHI.COM

22. निम्नांकित में कौन विधि ग्राह्य मुद्रा है?

(A) चेक

(B) ड्राफ्ट

(C) 10 रुपये का नोट

(D) इनमें सभी

Ans - (C)

23. आजकल मुद्रा का कौन-सा रूप अधिक प्रचलन में है?

(A) धात्विक मुद्रा

(B) सोने के सिक्के

(C) पत्र-मुद्रा

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (C)

24. मुद्रा का प्राचीनतम रूप है-

(A) धातु-मुद्रा

(B) सिक्के

(C) वस्तु-मुद्रा

(D) पत्र-मुद्रा

Ans - (C)

25. मुद्रा विनिमय का क्या है?

PDF SARTHI.COM

(A) माध्यम

(B) रूप

(C) साधन

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

26. निम्न में किसके अनुसार "मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करती है ?"

(A) हार्टले विदर्स

(B) हाट्रे

(C) केन्स

(D) प्रो० टामस

Ans - (A)

27. निम्नलिखित में से कौन प्लास्टिक मुद्रा के रूप में प्रचलित है ?

(A) चेक

(B) ड्राफ्ट

(C) कागजी नोट

(D) ए०टी०एम० कार्ड

Ans - (D)

28. किस धातु का सर्वाधिक प्रयोग मुद्रा के रूप में हुआ है?

(A) लोहा

PDF SARTHI.COM

(B) ताँबा

(C) पीतल

(D) चाँदी और सोना

Ans - (D)

29. सिक्कों का सबसे पहला प्रयोग कहाँ हुआ था?

(A) लदन

(B) चीन

(C) लोबिया

(D) यूनान

Ans - (C)

30. रुपये का नया प्रतीक है -

(A) रू०

(B) र

(C) आर

(D) ₹

Ans - (D)

31. एक रुपये का नोट जारी किया जाता है -

(A) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा

(B) केंद्रीय सरकार द्वारा

PDF SARTHI.COM

(C) सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (D)

32. देश का पहला ATM किस बैंक ने स्थापित किया?

(A) बैंक ऑफ इंडिया

(B) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

(C) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

(D) सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

Ans - (C)

33. आधुनिक युग की अर्थव्यवस्था की प्रगति का श्रेय किसको दिया जा सकता है?

(A) मुद्रा को

(B) उद्योग को

(C) कृषि को

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

34. किस धुरी के चारों तरफ सम्पूर्ण आर्थिक विज्ञान चक्कर काटता है?

(A) उत्पादन

(B) आय

(C) मुद्रा

PDF SARTHI.COM

(D) लाभ

Ans - (C)

35. मुद्रा के निम्न महत्त्व हैं -

(A) मुद्रा और औद्योगिक प्रगति

(B) आय का समुचित उपयोग

(C) भौतिक उन्नति का साधन

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (D)

36. किसने कहा था कि आधुनिक विश्व में उद्योग मुद्रारूपी वस्त्र धारण किए हुए है?

(A) क्राउथर

(B) मार्शल

(C) पीगू

(D) ट्रेस्कॉट

Ans - (C)

37. किसने कहा था कि "कर्ज जमा की संतान है और जमा कर्ज की संतान है?"

(A) कन्स

(B) मार्शल

(C) पौगू

(D) क्राउथर

PDF SARTHI.COM

Ans - (A)

38. निम्न में से कौन साख पत्र के अंतर्गत नहीं आता?

(A) चेक

(C) हुण्डो

(B) बैंक ड्राफ्ट

(D) कागजी मुद्रा

Ans - (D)

39. साख के पक्ष कौन-कौन से हैं?

(A) ऋण दाता

(B) ऋणी

(C) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

40. साख के मुख्य आधार होते हैं-

(A) ऋण की राशि

(B) समय

(C) व्यक्ति का चरित्र

(D) उपर्युक्त तीनों

Ans - (D)

PDFSARTHI.COM

41. आय एवं उपभोग के अंतर को क्या कहते हैं?

(A) बचत

(B) मुद्रा

(C) व्यय

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (A)

42. निम्नलिखित में से साख पत्र के अन्तर्गत कौन आता है?

(A) चेक

(B) बैंक ड्राफ्ट

(C) यात्री चेक

(D) इनमें से सभी

Ans - (D)

43. साख का संबंध है-

(A) गरीबी से

(B) उधार से

(C) दोनों से

(D) विश्वास से

Ans - (C)

PDF SARTHI.COM

44. साख का अर्थ है -

(A) विश्वास करना

(B) ऋण लौटाने की क्षमता

(C) A एवं B दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

45. इनमें से कौन साख का आधार नहीं है ?

(A) विश्वास

(B) शिक्षा

(C)चुकाने की क्षमता

(D) ऋण की अवधि

Ans - (B)

46. बचत को प्रभावित करनेवाले प्रमुख तत्व हैं -

(A) बचत करने की क्षमता

(B) बचत करने की इच्छा

(C) बचत करने की सुविधाएं

(D) इनमें से तीनों ही

Ans - (D)

PDFSARTHI.COM

4. हमारी वित्तीय संस्थाएँ

1. व्यावसायिक बैंक कितने प्रकार की जमाराशि स्वीकार करते हैं? संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर - लोगों की बचत को जमा के रूप में स्वीकार करना व्यावसायिक बैंकों का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। बैंक प्रायः चार प्रकार के खातों में रकम जमा करते हैं- स्थायी जमा, चालू जमा, संचयी जमा तथा आवर्ती जमा स्थायी जमा एक निश्चित अवधि के लिए होती है तथा सामान्यतः इसके पूर्व इस खाते से रकम वापस नहीं ली जा सकती। ऐसी जमा पर ब्याज की दर अपेक्षाकृत ऊँची रहती है। चालू जमा खाते में धन जमा करने या निकालने पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं रहता और जमाकर्ता इसमें कभी भी रुपया जमा कर सकता है या निकाल सकता है। इस जमा पर बैंक प्रायः कुछ भी ब्याज नहीं देता है। संचयी अथवा आवर्ती जमा में ग्राहक प्रतिमाह एक निश्चित रकम एक निश्चित अवधि के लिए जमा करते हैं। इन जमाओं पर ब्याज की दर स्थायी जमा से कम रहती है।

2. भारतीय रिजर्व बैंक के विभिन्न कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - 1भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केंद्रीय बैंक है तथा इसके मुख्य कार्य इस प्रकार हैं-

(i) पत्र- मुद्रा का निर्गमन - भारतीय रिजर्व बैंक को नोट- निर्गमन, अर्थात पत्र - मुद्रा जारी करने का एकाधिकार है। एक रुपया के नोट को छोड़कर देश में अन्य सभी नोट भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए जाते हैं।

(ii) साख का नियमन - पत्र - मुद्रा जारी करने के साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक देश में साख का भी नियमन एवं नियंत्रण करता है।

(iii) सरकार का बैंकर - सरकार के बैंकिंग-संबंधी सभी कार्य भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा संपन्न किए जाते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक सरकार के बैंकर, एजेंट एवं सलाहकार के रूप में कार्य करता है।

(iv) बैंकों का बैंक - भारतीय रिजर्व बैंक देश के सभी बैंकों का बैंक होता है और उनका पथप्रदर्शन करने के साथ-साथ उनपर नियंत्रण भी रखता है।

3. मुद्रा बाजार तथा पूँजी बाजार की वित्तीय संस्थाओं में अंतर स्पष्ट करें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - वित्तीय संस्थाओं को प्रायः दो वर्गों में विभाजित किया गया है- मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाएँ तथा पूँजी बाज़ार की वित्तीय संस्थाएँ । मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाएँ साख या ऋण का अल्पकालीन लेन-देन करती हैं। भारतीय मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाओं में भारतीय रिजर्व बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंक एवं अन्य व्यावसायिक बैंक, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक आदि प्रमुख हैं। पूँजी बाजार की संस्थाएँ उद्योग और व्यापार की दीर्घकालीन साख की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। बड़ी कंपनियों एवं व्यावसायिक संस्थानों की दीर्घकालीन पूँजी का एक बड़ा भाग अंशपत्रों या हिस्सों के विक्रय से प्राप्त होता है तथा इनका क्रय-विक्रय पूँजी बाजार में ही होता है।

4. हमारे राज्य की वित्तीय संस्थाओं को कितने वर्गों में बाँटा जा सकता है ?

उत्तर - हमारे राज्य की वित्तीय संस्थाओं को दो मुख्य वर्गों में बाँटा जा सकता है- संगठित क्षेत्र की संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ तथा असंगठित क्षेत्र की गैर-संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ | संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ वे हैं जिनपर भारतीय रिजर्व बैंक अथवा सरकार का नियंत्रण रहता है। इसके विपरीत, गैर-संस्थागत वित्तीय संस्थाओं में महाजन, भू-स्वामी, व्यापारी आदि शामिल हैं जो साख के परंपरागत स्रोत हैं। इन संस्थाओं पर सरकार का कोई प्रभावपूर्ण नियंत्रण नहीं है। राज्य में कार्यरत वित्त के संस्थागत साधनों के भी तीन मुख्य प्रकार हैं- बैंकिंग संस्थाएँ, राज्य की वित्तीय संस्थाएँ तथा राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ। इनमें बैंकिंग संस्थाएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। बैंकिंग संस्थाओं में व्यावसायिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा सहकारी बैंकों को सम्मिलित किया जाता है।

5. सूक्ष्म वित्त योजना क्या है ?

अथवा, सूक्ष्म वित्त योजना को परिभाषित करें।

उत्तर - अब अनेक विकासशील देश यह अनुभव कर रहे हैं कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे पारंपरिक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों से निर्धनता की समस्या का समाधान संभव नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इस प्रकार की निर्धनता मुख्यतः इन देशों की कमजोर ग्रामीण अधिसंरचना के कारण उत्पन्न होती है। इस दृष्टि से सूक्ष्म वित्त योजना निर्धनता निवारण का एक सक्षम विकल्प है। इसके द्वारा स्वयं-सहायता समूहों को व्यावसायिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों तथा सहकारी बैंकों से संलग्न करने, अर्थात जोड़ने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार, इस योजना से निर्धन परिवारों को स्वयं-सहायता समूहों के माध्यम से बैंक आदि संस्थागत स्रोतों से साख अथवा ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

6. स्वयं-सहायता समूह के क्या लाभ हैं ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - स्वयं-सहायता समूह के कई लाभ हैं-

(i) यह सदस्यों (गरीब लोगों) में बचत को प्रोत्साहित करता है।

(ii) सदस्यों को आसान किस्तों पर यह सस्ता ऋण उपलब्ध कराता है तथा सेठ-साहूकारों के शोषण से उन्हें बचाता है।

(iii) ग्रामीण अंचलों एवं कस्बों में यह स्वरोजगार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देता है।

(iv) सदस्यों को दिए जानेवाले ऋण एवं उसका उद्देश्य, ऋण की रकम, ब्याज की दर, ऋण अदायगी की अवधि आदि बातों का निर्णय इसके द्वारा ही किया जाता है। फलतः, ऋण लेने एवं वापस करने में इसके सदस्यों को कोई कठिनाई नहीं होती है।

(v) बैंकों से सूक्ष्म वित्त दिलवाने में भी यह अपने सदस्यों की सहायता करता है। बैंकों द्वारा इन समूहों को बिना किसी जमानत के ऋण देने का प्रावधान है, अतः ऋण लेना अत्यंत सहज एवं आसान हो जाता है।

7. किसानों को साख या ऋण की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर - अधिकांश भारतीय किसानों को कृषि कार्यों के लिए अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन तीन प्रकार के साख की आवश्यकता होती है। अल्पकालीन साख की आवश्यकता प्रायः 6 से 12 महीने तक के लिए होती है, इसलिए इसे मौसमी साख भी कहते हैं। इनकी माँग खाद एवं बीज खरीदने, मजदूरी चुकाने तथा ब्याज आदि का भुगतान करने के लिए की जाती है। प्रायः, फसल कटने के बाद किसान इन्हें वापस लौटा देता है। मध्यकालीन साख कृषि यंत्र, हल, बैल आदि खरीदने के लिए ली जाती है। इनकी अवधि प्रायः एक वर्ष से 5 वर्ष तक के लिए होती है। दीर्घकालीन साख की अवधि प्रायः 5 वर्षों से अधिक की होती है। किसानों को सिंचाई की व्यवस्था करने, भूमि को समतल बनाने, महँगे कृषि यंत्र आदि खरीदने के लिए इस प्रकार की साख या ऋण की आवश्यकता होती है। ये ऋण कृषि क्षेत्र में स्थायी सुधार लाने के लिए होते हैं।

हमारी वित्तीय संस्थाएँ

1. स्वयं-सहायता समूह में महिलाएँ किस प्रकार अपनी भूमिका निभाती हैं? वर्णन करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - पिछले कुछ वर्षों के अंतर्गत ग्रामीण निर्धन परिवारों को कर्ज या उधार देने के कुछ नए तरीके अपनाए गए हैं। इनमें एक तरीका ग्रामीण क्षेत्र के निर्धन व्यक्तियों को छोटे-छोटे स्वयं-सहायता समूहों में संगठित करने और उनकी बचत पूँजी को एकत्रित करने पर आधारित है। स्वयं-सहायता समूहों के संचालन में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है तथा अधिकांश स्वयं-सहायता समूह महिलाओं के द्वारा संगठित किए गए हैं। एक विशेष सहायता समूह में एक-दूसरे की पड़ोसी लगभग 15-20 महिलाएँ सदस्य होती हैं। ये महिलाएँ नियमित रूप से बचत करती हैं तथा इस बचत से ही इनकी पूँजी का निर्माण होता है। सदस्य महिलाएँ अपनी ऋण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छोटे-मोटे कर्ज इस स्वयं-सहायता समूह से ही ले सकती हैं। यदि यह समूह नियमित रूप से बचत करता है, तो एक-दो वर्ष बाद वह किसी बैंक से ऋण लेने योग्य हो जाता है। बैंक समूह के नाम पर ऋण देता है तथा इसका उद्देश्य स्व-रोजगार के अवसरों का सृजन करना है। समूह द्वारा अपने सदस्यों को उनकी बंधक जमीन छुड़ाने, गृह-निर्माण, सिलाई मशीन, पशु इत्यादि संपत्ति खरीदने के लिए छोटे-छोटे ऋण दिए जाते हैं। प्रायः, निर्धन महिलाएँ ऋण लौटाने के अपने दायित्व के प्रति बहुत गंभीर होती हैं। यही कारण है कि बैंक भी इन स्वयं-सहायता समूहों को बिना किसी जमानत के ऋण देने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इस प्रकार, स्वयं-सहायता समूह की महिलाएँ ग्रामीण निर्धनों को संगठित करने और उन्हें जागरूक बनाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। इससे महिलाएँ स्वावलंबी हुई हैं तथा उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

2. मुद्रा बाजार की प्रमुख वित्तीय संस्थाओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर - वित्तीय संस्थाओं को प्रायः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है- मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाएँ तथा पूँजी बाजार की वित्तीय संस्थाएँ । मुद्रा बाजार की वित्तीय संस्थाओं में बैंकिंग संस्थाएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। भारतीय बैंकिंग प्रणाली के शीर्ष पर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया है जिसकी स्थापना 1935 में हुई थी। यह भारत का केंद्रीय बैंक है जो देश की संपूर्ण बैंकिंग व्यवस्था का नियमन करता है।

भारत की बैंकिंग प्रणाली व्यावसायिक बैंकों पर आधारित है और ये बैंक भारतीय मुद्रा बाजार के मुख्य अंग हैं। व्यावसायिक बैंकों का मुख्य कार्य जनता की बचत को जमा के रूप में स्वीकार करना तथा उद्योग एवं व्यवसाय को उत्पादक कार्यों के लिए ऋण प्रदान करना है। 1975 से सरकार ने ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को ऋण प्रदान करने के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की एक नई योजना आरंभ की है। इन बैंकों का मुख्य कार्य ग्रामीण क्षेत्र के छोटे एवं सीमांत किसानों, कृषि श्रमिकों, कारीगरों, छोटे व्यापारियों आदि को आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

PDFSARTHI.COM

भारतीय मुद्रा बाजार के संगठित क्षेत्र में सहकारी संस्थाओं का भी विशेष महत्त्व है। सहकारी बैंकों को कृषि ऋण का आदर्श स्रोत माना जाता है। वर्तमान में देश की ग्रामीण साख का एक-चौथाई से अधिक सहकारी साख समितियाँ प्रदान करती हैं।

भारतीय मुद्रा बाजार का एक असंगठित क्षेत्र भी है जिसे देशी बैंकर की संज्ञा दी जाती है। इसे देश के विभिन्न भागों में महाजन, साहूकार, सर्राफ आदि अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी देशी बैंकरों की ही प्रधानता है।

3. राज्य स्तरीय संस्थागत वित्तीय स्रोत के कार्यों का वर्णन करें।

उत्तर - राज्य के संस्थागत वित्तीय स्रोतों में व्यावसायिक बैंक, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक महत्त्वपूर्ण हैं। इनका मुख्य कार्य उद्योग, व्यापार एवं कृषि की साख-संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना है। बिहार में वित्त के संस्थागत स्रोतों में व्यावसायिक बैंक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। राज्य के कुल ऋण वितरण का लगभग 65 प्रतिशत इन्हीं के माध्यम से होता है। व्यावसायिक बैंक कृषि एवं उद्योग दोनों ही क्षेत्रों को ऋण प्रदान करते हैं, जबकि क्षेत्रीय बैंक तथा सहकारी संस्थाएँ मुख्यतया कृषि एवं ग्रामीण साख की व्यवस्था करती हैं। सहकारी संस्थाओं को कृषि साख का आदर्श स्रोत माना जाता है। परंतु, बिहार में सहकारी समितियों के पास साधनों का अभाव है, इनका प्रबंध एवं संचालन दोषपूर्ण है तथा राज्य के कृषि ऋण में सहकारी संस्थाओं की हिस्सेदारी मात्र 10 प्रतिशत है। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का मुख्य कार्य ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को साख प्रदान करना है। इन बैंकों की कार्य-पद्धति व्यावसायिक बैंकों के समान ही है, लेकिन इनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित है। बिहार में 2 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक हैं तथा इनमें प्रत्येक बैंक राज्य के एक विशेष क्षेत्र में सेवा प्रदान करता है।

4. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर - देश में कृषि एवं ग्रामीण साख की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा इस कार्य में संलग्न विभिन्न संस्थाओं के कार्यों में समन्वय स्थापित करने के लिए भारत सरकार ने जुलाई 1982 में राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (National Bank for Agriculture and Rural Development, NABARD) की स्थापना की। इस बैंक ने भारतीय रिजर्व बैंक के कृषि ऋण विभाग, ग्रामीण योजना एवं ऋण कक्ष तथा कृषि पुनर्वित्त एवं विकास निगम के सभी कार्यों को अपने हाथ में ले लिया है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं अन्य कार्यकलापों के लिए ऋण उपलब्ध कराने तथा इस संबंध में नीति-निर्धारण के लिए देश की शीर्ष संस्था है।

PDFSARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

इस बैंक के मुख्य कार्य निम्नांकित हैं।

(i) यह बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए निवेश तथा उत्पादक ऋण देनेवाली संस्थाओं के पुनर्वित्त के लिए मुख्य प्रतिनिधि का कार्य करता है।

(ii) इसका दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य पुनर्वास योजनाएँ तैयार करना, उनपर निगरानी रखना तथा ऋण उपलब्ध करानेवाली संस्थाओं का पुनर्गठन एवं उनके कर्मचारियों का प्रशिक्षण है।

(iii) इस बैंक का एक अन्य कार्य ऋण वितरण प्रणाली की क्षमता को बढ़ाने के लिए उनकी संस्थागत व्यवस्था को विकसित करना है।

(iv) यह बैंक क्षेत्रीय स्तर पर विकास कार्य में लगी सभी संस्थाओं के क्रियाकलापों में समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है।

4. हमारी वित्तीय संस्थाएं

1. भारत में वित्तीय संस्थाओं के मुख्य रूप होते हैं –

(A) दो

(B) चार

(C) तीन

(D) पाँच

Ans – (A)

2. वित्तीय संस्थाओं के प्रकार हैं –

(A) तीन

(B) चार

PDF SARTHI.COM

(C) एक

(D) दो

Ans – (D)

3. कृषि एवं ग्रामीण साख की पूर्ति के लिए किस संस्था की स्थापना की गई?

(A) विस्कोमान

(B) क्षेत्रीण ग्रामीण बैंक

(C) सहकारी बैंक

(D) नाबार्ड

Ans – (D)

4. बिहार में सांधागत वितीय संस्थाएँ कितने प्रकार के हैं?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – (D)

5. भारतीय पूँजी बाजार निम्न में से किस प्रकार का वित्त उपलब्ध कराता है?

(A) दीर्घकालीन

(B) अल्पकालीन

(C) मध्यकालीन

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

6. सहकारी बैंक किसे ऋण प्रदान करता है?

(A) उद्योगपति को

(B) उपभोक्ता को

(C) कृषक को

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (D)

7. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण किस वर्ष हुआ था?

(A) 1 अप्रैल, 1935

(B) । जनवरी, 1949,

(C) 31 जनवरी, 1935

(D) 30 जून, 1949

Ans – (B)

8. केन्द्रीय बैंक का मुख्यालय कहाँ है?

(A) दिल्ली

(B) चेन्नई

(C) मुम्बई

(D) कोलकाता

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

9. इनमें कौन एशिया का सबसे पुराना शेयर बाजार है?

(A) मुंबई

(B) कानपुर

(C) पटना

(D) दिल्ली

Ans – (A)

10. बिहार के वित्त का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्थागत समूह कौन है?

(A) सहकारी बैंक

(B) व्यावसायिक बैंक

(C) राष्ट्रीय संस्थाएँ

(D) राजकीय संस्थाएँ

Ans – (B)

11. भारत की वित्तीय राजधानी किस शहर को कहा गया है?

(A) दिल्ली

(B) मुम्बई

(C) पटना

(D) बंगलोर

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

12. भारत का केंद्रीय बैंक कौन है?

(A) पंजाब नेशनल बैंक

(B) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

(C) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

(D) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

Ans – (D)

13. निम्नलिखित में से कौन-सा संस्थान भारत में मुद्रा जारी करने के लिए अधिकृत है?

(A) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

(B) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया

(C) संसद

(D) राष्ट्रपति

Ans – (A)

14. पूँजी बाजार में किस प्रकार के ऋणों का लेन-देन होता है?

(A) अल्पकाल

(B) दीर्घकाल

(C) A एवं B दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

15. भारतीय मुद्रा बाजार में किस प्रकार के ऋणों का लेन-देन होता है?

PDF SARTHI.COM

(A) अल्पकाल

(B) दीर्घ काल

(C) (A) एवं (B) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

16. इनमें से कौन-सा संस्थागत वित का साधन है।

(A) सेठ साहूकार

(B) रिश्तेदार

(C) व्यावसायिक बैंक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

17. गैर संस्थागत वित्त प्रदान करनेवाला सबसे लोकप्रिय साधन है

(A) सहकारी बैंक

(B) देशी बैंकर

(C) व्यावसायिक बैंक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

18. निम्न में से कौन संस्थागत वित्तीय संस्थाओं के उदाहरण हैं?

(A) महाजन

PDF SARTHI.COM

(B) व्यापारी

(C) रिश्तेदार

(D) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक/व्यावसायिक बैंक

Ans – (D)

19. वित्तीय संस्थाओं में किन संस्थाओं को सम्मिलित किया जाता है?

(A) व्यावसायिक बैंक

(B) सहकारी साख समितियाँ

(C) बीमा कम्पनियाँ

(D) इनमें सभी

Ans – (D)

20. गैर-संस्थागत वित्त प्रदान करने वाला सबसे लोकप्रिय साधन है -

(A) देशी बैंकर

(B) महाजन

(C) व्यापारी

(D) सहकारी बैंक

Ans – (B)

21. भारत में कितने राष्ट्रीयकृत बैंक हैं?

(A) 14

(B) 19

PDF SARTHI.COM

(C) 20

(D) 27

Ans – (A)

22. प्राथमिक कृषि साख समिति कृषक को किस तरह का ऋण प्रदान करती है?

(A) मध्यकालीन

(B) दीर्घकालीन

(C) अल्पकालीन

(D) अतिअल्पकालीन

Ans – (C)

23. शेयर बाजार की नियामक संस्था है -

(A) SIDBI

(B) SEBI

(C) RBI

(D) STOCK EXCHANGE

Ans – (D)

24. ग्रामीण बैंक की स्थापना किस वर्ष की गयी थी?

(A) 2 अक्टूबर, 1975

(B) 5 अक्टूबर, 1975

(C) 30 जून, 1975

PDF SARTHI.COM

(D) 1 अप्रैल, 1975

Ans – (A)

25. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना मुख्यतः किनके लिए की गई है?

(A) छोटे एवं सीमांत किसान

(B) व्यावसायी वर्ग

(C) स्वयं सहायता समूह

(D) सहकारिता

Ans – (A)

26. बिहार में क्षेत्रीय बैंक की स्थापना किस वर्ष को गई थी?

(A) 1970

(B) 1972

(C) 1975

(D) 1980

Ans – (C)

27. देश में अभी कार्यरत क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की संख्या है-

(A) 190

(B) 192

(C) 199

(D) 196

PDF SARTHI.COM

Ans – (D)

28. नाबार्ड की स्थापना कब की गई थी?

(A) 1980

(B) 1982

(C) 2005

(D) 1990

Ans – (B)

29. राज्य में कार्यरत केंद्रीय सहकारी बैंकों की संख्या कितनी है?

(A) 50

(C) 35

(B) 75

(D) 25

Ans – (D)

30. बैंक लिकेज कार्यक्रम की शुरुआत किस वर्ष की गई थी?

(A) 1990

(B) 1992

(C) 1994

(D) 1995

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

31. दीर्घकालीन ऋण प्रदान करनेवाली संस्था कौन-सी है?

(A) कृषक महाजन

(B)भूमि विकास बैंक

(C)प्राथमिक कृषि साख समिति

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – (B)

32. अल्पकालीन ऋण चुकाने की अवधि.......... तक होती है।

(A) 3 महीने से 6 महीने

(B) 6 महीने से 15 महीने

(C) 12 महीने से 15 महीने

(D) 15 महीने से 20 महीने

Ans – (B)

33. व्यवसायिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण कब किया गया?

(A) 1965 में

(B) 1969 में

(C)1975 में

(D) 1980 में

Ans – (B)

34. आवसायिक बैंक कितने प्रकार की जमाराशि स्वीकार करते हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) स्थायी जमा

(B) आवर्ती जमा

(C) संचयी जमा

(D) इनमें से सभी

Ans – (D)

35. निम्न में से कौन व्यावसायिक बैंक के कार्य नहीं हैं?

(A) जमा राशि को स्वीकार करना

(B) ऋण देना

(C) मौद्रिक नीति तय करना

(D) एजेन्सी संबंधी कार्य

Ans – (C)

36. व्यवसायिक बैंकों द्वारा स्वीकार किए गए जमा में शामिल नहीं है -

(A) स्थायी जमा

(B) चालू जमा.

(C) आवर्ति जमा

(D) वस्तु जमा

Ans – (D)

37. बैंक का कार्य नहीं है -

(A) लॉकर सुविधा

PDF SARTHI.COM

(B) क्रेडिट कार्ड

(C) नगद साख

(D) स्वयं सहायता समूह बनाना

Ans – (D)

38. ओवर ड्राफ्ट किस खाता पर दिया जाता है?

(A) बचत खाता

(B) चालू खाता

(C) मियादी खाता

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – (B)

39. इनमें से कौन व्यापारिक बैंक की जमा का प्रकार नहीं है?

(A) स्थायी जमा

(B) चालू जमा

(C) अधिविकर्ष

(D) आवर्ती जमा

Ans – (C)

40. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

(A) 1934

(B) 1935

PDF SARTHI.COM

(C) 1948

(D) 1951

Ans – (B)

41. सहकारिता के विकास पर किस पंचवर्षीय योजना में बल दिया गया?

(A) प्रथम

(B) द्वितीय

(C) तृतीय

(D) चतुर्थ

Ans – (A)

42. किसी गाँव में कम-से-कम कितने व्यक्ति मिलकर एक प्राथमिक साख समिति का निर्माण कर सकते हैं?

(A) 15

(B) 10

(C) 12

(D) 20

Ans – (B)

43. सहकारी नियोजन समिति का गठन किसके नेतृत्व में किया गया था?

(A) आर०जी० सरैया

(B) मेक्लेगन

(C) होरेश

PDF SARTHI.COM

(D) चेम्सफोर्ड

Ans – (A)

44. भारत में सहकारिता आंदोलन का प्रारंभ का हुआ?

(A) 1904 ई०

(B) 1905 ई०

(C) 1907 ई०

(D) 1920 ई०

Ans – (A)

45. सहकारिता प्रांतीय सरकारों का हस्तांतरित विषय कब बनी?

(A) 1929 ई०

(B) 1919 ई०

(C) 1918 ई०

(D) 1914 ई०

Ans – (B)

46. सूक्ष्म वित्त योजना साख या ऋण की सुविधा किन्हें उपलब्ध कराता है?

(A) मध्यम वर्ग

(C) गरीब वर्ग

(B) व्यावसायिक वर्ग

(D) कृषक वर्ग

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

47. भारत में सूक्ष्म वित्त की शुरुआत किस दशक के बीच हुई?

(A) 1970

(B) 1980

(C) 1990

(D) 2000

Ans – (C)

48. स्वयं-सहायता समूह में सदस्यों की संख्या सामान्यतः होती है -

(A) 100-200

(B) हजारों

(C) 15-20

(D) अनगिनत

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

5. रोजगार एवं सेवाएँ

1. एक अर्थव्यवस्था में रोजगार के प्रमुख क्षेत्र क्या हैं?

उत्तर - एक अर्थव्यवस्था के व्यावसायिक ढाँचे में रोजगार के तीन प्रमुख क्षेत्र होते हैं- प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र। प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, पशुपालन, वानिकी, खनन आदि को सम्मिलित किया जाता है। इनमें कृषि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। द्वितीयक क्षेत्र को उद्योग क्षेत्र भी कहते हैं तथा इसमें विनिर्माण, निर्माण, विद्युत, गैस तथा जलापूर्ति शामिल हैं। तृतीयक क्षेत्र में परिवहन, संचार, व्यापार, बैंकिंग, बीमा तथा अन्य सभी प्रकार की सेवाएँ आती हैं। यह क्षेत्र वस्तुओं का नहीं, वरन सेवाओं का उत्पादन करता है। यही कारण है कि तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र कहा जाता है। विकसित देशों के कार्यबल का अधिकांश भाग सेवा क्षेत्र में ही लगा होता है। रोजगार अथवा आय की दृष्टि से किसी देश की जनसंख्या इन तीनों क्षेत्रों में विभाजित होती है।

2. रोजगार और सेवा में क्या संबंध है ?

उत्तर - रोजगार और सेवाओं में घनिष्ठ संबंध है। आर्थिक संवृद्धि के साथ ही सेवा क्षेत्र अब किसी भी देश का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हो गया है तथा इसमें रोजगार की संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। इस क्षेत्र के अंतर्गत ऐसे अनेक व्यवसाय हैं जिनमें अपेक्षाकृत बहुत कम पूँजी निवेश के द्वारा बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन संभव है। विगत वर्षों के अंतर्गत संचार सेवाओं के प्रसार से सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में बहुत वृद्धि हुई है। भारत के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का मात्र 13.7 प्रतिशत (2012-13 के अनंतिम आँकड़ों पर आधृत) योगदान है, जबकि देश की 55 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अपने जीवनयापन के लिए इसी पर निर्भर है । कृषि पर से इस अत्यधिक जनभार को कम करने के लिए सेवा क्षेत्र का विस्तार अत्यंत आवश्यक है।

3. बाह्यस्रोतीकरण किसे कहते हैं?

उत्तर - विगत वर्षों के अंतर्गत सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का बहुत तेजी से विकास हुआ है। आज दूरसंचार सुविधाओं द्वारा पूर्व की अपेक्षा विभिन्न देशों से संपर्क स्थापित करना तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान अधिक सुगम हो गया है। अतः, हम अपने देश में रहकर भी विश्व के अन्य देशों को अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं। इससे सेवा क्षेत्र का बहुत विस्तार हुआ है तथा अन्य वस्तुओं के समान ही सेवाओं का भी निर्यात होने लगा है। जब कोई कंपनी अपने उत्पादन से संबंधित सेवाएँ अन्य स्रोतों या देशों से प्राप्त करती है तो इसे बाह्यस्रोतीकरण (outsourcing)

PDFSARTHI.COM

कहते हैं। हमारे देश में श्रम सस्ता होने के कारण विकसित देशों की अनेक कंपनियाँ अब अपनी सेवाओं का आउटसोर्सिंग करने लगी हैं। एक विदेशी फर्म द्वारा अपनी पुस्तक की डिजाइन, छपाई आदि का कार्य हमारे देश में करवाना आउटसोर्सिंग का उदाहरण है।

4. संचार सेवाओं के विकास में कंप्यूटर का क्या योगदान है ?

उत्तर - संचार सेवाओं के विकास एवं प्रसार में कंप्यूटर का योगदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। कंप्यूटर एक स्वचालित मशीन है जिसके अनेक उपयोग हैं। आज दूरसंचार, परिवहन, विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, शोध, अनुसंधान आदि के क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इससे इन सेवाओं के स्तर में सुधार हुआ है। कंप्यूटर के दो मुख्य अंग होते हैं - सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर | कंप्यूटर सॉफ्टवेयर उद्योग श्रमप्रधान है तथा इसके उत्पादन में भारत विश्व का एक अग्रणी देश माना जाने लगा है। हमारे देश का बेंगलुरु शहर सूचना प्रौद्योगिकी तथा सॉफ्टवेयर का प्रतीक बन गया है। इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएँ हैं।

5. वैश्वीकरण का सेवा क्षेत्र पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - भारत के सेवा क्षेत्र पर वैश्वीकरण के प्रभाव मुख्यतया अनुकूल कहे जा सकते हैं। इसके फलस्वरूप बहुराष्ट्रीय निगमों ने देश के कई भागों में पूँजी निवेश किया है तथा अपने कार्यालय एवं कारखानों की स्थापना की है। इससे रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ है। इसी प्रकार, विगत वर्षों के अंतर्गत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का बहुत तेजी से विकास हुआ है तथा भारत इस क्षेत्र में एक अग्रणी देश माना जाने लगा है। इसके फलस्वरूप पिछले कुछ वर्षों से भारत बाह्यस्रोतीकरण (outsourcing) का एक प्रधान केंद्र बन गया है और यहाँ से लेखाकरण, आँकड़ा प्रविष्टि, इंजीनियरिंग, कानूनी, प्रबंधकीय परामर्श जैसी अनेक सेवाओं का निर्यात किया जाता है। इसी प्रकार, श्रम लागत कम होने के कारण विभिन्न देशों के बहुराष्ट्रीय निगमों ने उपभोक्ताओं को ग्राहक सेवा उपलब्ध कराने के लिए अपने सूचना केंद्रों की स्थापना भारत में की है। इससे भारत के सेवा क्षेत्र का बहुत तेजी से विस्तार हुआ है।

रोजगार एवं सेवाएँ

1. रोजगार सृजन में सेवाओं की भूमिका की विवेचना कीजिए।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - आज सेवा क्षेत्र सभी देशों की अर्थव्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हो गया है तथा इसमें रोजगार की संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। भारत जैसे एक अर्धविकसित देश के लिए सेवा क्षेत्र और अधिक महत्त्वपूर्ण है। हमारे सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का मात्र 20.19 (2020-21 में) प्रतिशत योगदान है जबकि देश की लगभग 55 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या अपने जीवनयापन के लिए इसी पर निर्भर है। कृषि पर से इस अत्यधिक जनभार को कम करने के लिए सेवा क्षेत्र का विस्तार आवश्यक है। इस क्षेत्र के अंतर्गत ऐसे अनेक व्यवसाय हैं जिनमें अपेक्षाकृत बहुत कम पूँजी निवेश के द्वारा बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन संभव है।

सेवा क्षेत्र की पारंपरिक सेवाओं में परिवहन, वित्त, संचार, विपणन, व्यापार आदि महत्त्वपूर्ण हैं जिनमें शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं को भी सम्मिलित किया जाता है। वर्तमान में रोजगार सृजन की दृष्टि से संचार सेवाएँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। विगत वर्षों के अंतर्गत संचार उपग्रहों के प्रयोग से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। इसके फलस्वरूप इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बहुत बढ़ गए हैं।

2. वर्तमान आर्थिक मंदी का भारत के सेवा क्षेत्र पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर - मंदी एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यावसायिक क्रियाएँ सामान्य स्तर से नीचे रहती हैं। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन एवं आय की मात्रा में गिरावट आने लगती है, श्रमिक बेरोजगार हो जाते हैं तथा मजदूरी की दरों में कमी हो जाती है। विश्व स्तर पर इस प्रकार की मंदी सर्वप्रथम 1929-30 में हुई। यह मंदी संयुक्त राज्य अमेरिका से आरंभ हुई जिसने विश्व के प्रायः सभी देशों को प्रभावित किया था। व्यापार के विस्तार से विश्व के विभिन्न देश एक-दूसरे से जुड़ गए थे जिनमें अमेरिका सबसे समृद्ध देश था। अतः, इसकी आर्थिक मंदी से प्रायः सभी देश प्रभावित हुए थे।

वर्तमान मंदी का प्रारंभ भी 2008 में अमेरिका से हुआ जिससे सेवा क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। उपभोक्ताओं की माँग कम हो जाने के कारण बहुराष्ट्रीय निगमों का लाभ भी कम हो गया है और वे श्रमिकों की छंटनी कर रहे हैं। इस मंदी से भारत भी प्रभावित हुआ है तथा हमारे सेवा क्षेत्र पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इससे हमारे निर्यातों में कमी हुई है, निजी क्षेत्र के उद्योग एवं व्यवसाय में अस्थिरता आई है, श्रमिकों की छँटनी हुई है और यहाँ के तकनीकी कर्मचारियों की माँग विदेशों में कम हो गई है। परंतु, अमेरिका और यूरोप के देशों की अपेक्षा भारत इससे कम प्रभावित हुआ है। इसका प्रमुख कारण वित्तीय संस्थाओं तथा पूँजी बाजार पर सरकार का प्रभावपूर्ण नियंत्रण है।

3. बुनियादी सुविधाएँ सेवा क्षेत्र के विकास में किस प्रकार सहायक होती हैं? विवेचना कीजिए।

PDFSARTHI.COM

उत्तर - सेवा क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से मानवीय तत्त्वों पर निर्भर है तथा इसके विकास एवं विस्तार के लिए मानवीय संसाधनों का विकास आवश्यक है। योग्य, कुशल एवं प्रशिक्षित श्रम के अभाव में सेवा क्षेत्र का विकास संभव नहीं है। लेकिन, एक सक्षम श्रमबल के निर्माण के लिए कुछ बुनियादी अथवा आधारभूत सुविधाएँ आवश्यक हैं। इन सेवाओं या सुविधाओं में ये महत्त्वपूर्ण हैं-

(i) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण - मानवीय संसाधनों के विकास के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। देश में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएँ ही एक सक्रिय श्रमशक्ति का निर्माण करती हैं। किसी व्यक्ति की सतत कार्य करने की क्षमता बहुत अंशों में उसके स्वास्थ्य की दशा पर निर्भर है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही उत्पादन कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेकर उत्पादन में वृद्धि कर सकता है।

(ii) शिक्षा - मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से शिक्षा की भूमिका भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है। एक उपयुक्त एवं तर्कसंगत शिक्षा से देश में कुशल एवं योग्य श्रमशक्ति का निर्माण होता है और हमारी उत्पादन क्षमता बढ़ती है। उचित शिक्षा नागरिकों की मनोवृत्ति, ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास कर उन्हें अधिक योग्य, सक्षम तथा बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप बनाती है।

(iii) आवास एवं अन्य नागरिक सुविधाएँ - मानवीय संसाधनों के विकास के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के समान ही आवास तथा कुछ अन्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था भी आवश्यक है। परंतु, भारत में आवास एवं अन्य नागरिक सुविधाओं का स्तर बहुत निम्न है। यह भारतीय श्रमिकों की कार्यक्षमता कम होने का एक प्रधान कारण है।

5. रोजगार एवं सेवाएं

1. इनमें कौन पूर्णतः सरकारी सेवा है?

(A) स्वास्थ्य सेवा

(B) शिक्षा सेवा

(C) सैन्य सेवा

(D) वायुयान सेवा

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

2. कौन-सी सेवा सरकारी सेवा हैं?

(A) शिक्षा सेवा

(B) बैंकिंग सेवा

(C) यातायात सेवा

(D) स्वास्थ्य सेवा

Ans – (A)

3. सेवा क्षेत्र का निर्माण होता है-

(A) परिवहन सेवाओं द्वारा

(B) संचार सेवाओं द्वारा

(C) वाणिज्य सेवाओं द्वारा

(D) इनमें सभी के द्वारा

Ans – (D)

4. भारत में सेवा क्षेत्र को सामान्यतः कितने भागों में बाँटा जा सकता है?

(A) दो

(B) चार

(C) छः

(D) आठ

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

5. सेवा क्षेत्र में शामिल होता है-

(A) सरकारी क्षेत्र

(B) गैर सरकारी क्षेत्र

(C) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

6. इनमें से कौन सरकारी सेवा के अंतर्गत शामिल किया जाता है?

(A) सैन्य सेवा

(B) रेलवे

(C) A तथा B दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

7. वर्तमान समय में सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान है-

(A) 27%

(B) 50% से भी अधिक

(C) 10% से भी कम

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

8. एक अर्थव्यवस्था के किस क्षेत्र को सेवा क्षेत्र कहा जाता है?

PDF SARTHI.COM

(A) द्वितीय क्षेत्र

(B) तृतीयक क्षेत्र

(C) प्राथमिक क्षेत्र

(D) इनमें सभी

Ans – (D)

9. भारत की अधिकांश जनसंख्या अर्थव्यवस्था के किस क्षेत्र में संलग्न है?

(A) प्राथमिक अथवा कृषि क्षेत्र में

(B) द्वितीयक अथवा उद्योग क्षेत्र में

(C) तृतीयक अथवा सेवा क्षेत्र में

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

10. विश्व के विकसित देश हैं -

(A) अमेरिका

(B) ब्रिटेन

(C) जापान

(D) इनमें से सभी

Ans – (D)

11. किस क्षेत्र में सर्वाधिक छिपी हुई बेरोजगारी देखने को मिलती है?

(A) कृषि

PDF SARTHI.COM

(B) उद्योग

(C) सेवा

(D) यातायात

Ans – (A)

12. रोजगार के प्रमुख क्षेत्र कितने हैं?

(A) एक

(B) तीन

(C) दो

(D) चार

Ans – (B)

13. आर्थिक विकास के कितने क्षेत्र हैं?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – (C)

14. आर्थिक विकास का तीसरा क्षेत्र क्या है?

(A) कृषि क्षेत्र

(B) विज्ञान क्षेत्र

PDF SARTHI.COM

(C) शिक्षा क्षेत्र

(D) सेवा क्षेत्र

Ans – (D)

15. किस योजना के अन्तर्गत सरकार ने ग्रामीणों को काम का कानूनी अधिकार दिया है?

(A) जवाहर रोजगार योजना

(B) मनरेगा

(C) स्वर्ण जयंती ग्राम रोजगार योजना

(D) सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

Ans – (B)

16. सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान कितना प्रतिशत है?

(A) 16.5%

(B) 18.5%

(C) 17.5%

(D) 15.5%

Ans – (B)

17. विकसित देशों के कार्यबल का अधिकांश भाग कार्यरत रहता है –

(A) कृषि क्षेत्र में

(B) औद्योगिक क्षेत्र में

(C) सेवा क्षेत्र में

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई

Ans – (C)

18. एक अर्थव्यवस्था की आधार संरचना का निर्माण होता है -

(A) कृषि द्वारा

(B) उद्योगों द्वारा

(C) सेवाओं द्वारा

(D) तीनों के द्वारा

Ans – (D)

19. कौन-सी सेवा गैर-सरकारी है?

(A) सैन्य सेवा

(B) वित्त सेवा

(C) मॉल सेवा

(D) रेल सेवा

Ans – (C)

20. विकासशील देशों में कार्यशील जनसंख्या अधिकांशतः संलग्न है

(A) कृषि क्षेत्र में

(B) औद्योगिक क्षेत्र ३

(C) सेवा क्षेत्र में

(D) इनमें से सभी

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

21. नरेगा के अंतर्गत ग्रामीण मजदूरों को साल कम-से-कम कितने दिनों के लिए रोजगार के की व्यवस्था है?

(A) 100 दिनों के लिए

(B) 125 दिनों के लिए

(C) 150 दिनों के लिए

(D) 200 दिनों के लिए

Ans – (A)

22. जवाहर रोजगार योजना लागू हुई -

(A) 1988

(B) 1989

(C) 1990

(D) 1991

Ans – (B)

23. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना को शुरुआत कब की गई?

(A) 2004

(B) 2005

(C) 2006

(D) 2009

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

24. इनमें रोजगार सृजन के लिए कौन-सी योजना चलाई जा रही है?

(A) काम के बदले अनाज

(B) स्वयं सहायता समूह

(C) मनरेगा

(D) इनमें सभी

Ans – (D)

25. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना किस महापुरुष के नाम पर है?

(A) महात्मा गाँधी

(B) जवाहरलाल नेहरू

(C) राजीव गाँधी

(D) इंदिरा गाँधी

Ans – (A)

26. स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना किस वर्ष शुरू की गई थी?

(A) 1997

(B) 2000

(C) 1990

(D) 1995

Ans – (A)

27. स्वयं सहायता समूह योजना किस वर्ष लागू किया गया?

PDF SARTHI.COM

(A) 1990

(B) 1991

(C) 1992

(D) 1993

Ans – (C)

28. स्वयं सहायता समूह में लगभग कितने सदस्य होते हैं?

(A) 5-10

(B) 10-15

(C) 15-20

(D) 20-25

Ans – (C)

29. नरेगा (NREGA) कार्यक्रम के नाम के साथ किस व्यक्ति का नाम जोड़ा गया है?

(A) मनमोहन सिंह

(B) मोरारजी देसाई

(C) मुरली मनोहर जोशी

(D) महात्मा गाँधी

Ans – (D)

30. इनमें किसे 'अग्रणी युवा देश' कहा जाता है?

(A) जापान

PDF SARTHI.COM

(B) भारत

(C) अमेरिका

(D) रूस

Ans – (B)

31. भारत को किस उद्योग के क्षेत्र में अधिक सफलता मिली है?

(A) कंप्यूटर हार्डवेयर

(B) कंप्यूटर साफ्टवेयर

(C) दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

32. विश्व में बाह्यस्रोती (Outsourcing) के लिए सबसे सस्ता, सुरक्षित और गुणवत्ता वाला देश है-

(A) भारत

(B) अमेरिका

(C) चीन

(D) रूस

Ans – (A)

33. भारत में सेवा क्षेत्र की शुरुआत हुई।

(A) 1990 के दशक

(B) 1980 के दशक

PDF SARTHI.COM

(C) 1970 के दशक

(D) इनमें कोई नहीं

Ans – (B)

34. भारत की परिवहन सेवाओं में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं -

(A) सड़क

(B) वायुमार्ग

(C) जलमार्ग

(D) रेलवे

Ans – (D)

35. ऊर्जा के मुख्य स्रोत क्या हैं?

(A) कोयला

(B) पेट्रोलियम

(C) विद्युत

(D) इनमें से सभी

Ans – (D)

36. मानव पूँजी के प्रमुख घटक है-

(A) ज्ञान

(B) कौशल

(C) अनुभव

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से सभी

Ans – (D)

37. मानव पूँजी का विकास होता है

(A) प्रशिक्षण से

(B) सूचना में पूँजी निवेश से

(C) शिक्षा से

(D) इनमें सभी

Ans – (D)

38. मानव पूँजी निर्माण के लिए आवश्यक पूर्व शर्तें हैं

(A) वस्त्र एवं आवास

(B) स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ मन

(C) पर्याप्त भोजन

(D) इनमें सभी

Ans – (D)

39. मानव पूँजी का प्रमुख घटक हैं

(A) शिक्षा एवं प्रशिक्षण

(B) आवास

(C) स्वास्थ्य

(D) इनमें सभी

PDF SARTHI.COM

Ans – (D)

40. मानव पूँजी के प्रमुख घटक कितने हैं?

(A) 6

(B) 4

(C) 5

(D) 8

Ans – (C)

41. 6 से 14 वर्ष की आयु वाले बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा कहलाती है-

(A) प्रारंभिक शिक्षा

(B) माध्यमिक शिक्षा

(C) उच्च शिक्षा

(D) व्यावसायिक शिक्षा

Ans – (A)

42. मानवीय संसाधनों के विकास के लिए संर्वाधिक सेवाएँ महत्त्वपूर्ण हैं-

(A) शिक्षा

(B) स्वास्थ्य

(C) ऊर्जा

(D) पर्यावरण

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

43. भारत में आर्थिक विकास का नया दौर कब शुरू हुआ?

(A) 1991

(C) 1989

(B) 1990

(D) 1988

Ans – (A)

44. भारत सरकार ने किस प्रकार की शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किया है?

(A) प्रारंभिक शिक्षा

(B) माध्यमिक शिक्षा

(C) उच्च शिक्षा

(D) तकनीकी शिक्षा

Ans – (A)

45. कौन प्राथमिक ऊर्जा का उदाहरण नहीं है?

(A) कोयला

(B) विद्युत

(C) पेट्रोलियम

(D) प्राकृतिक गैस

Ans – (B)

46. विगत वर्षों में बिहार में किस क्षेत्र का सर्वाधिक विकास हुआ है?

PDF SARTHI.COM

(A) सेवा क्षेत्र

(B) कृषि क्षेत्र

(C) औद्योगिक क्षेत्र

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

47. 21 वीं सदी में किस देश को युवाओं का देश माना जाएगा?

(A) चीन

(C) भारत

(B) अमेरिका

(D) पाकिस्तान

Ans – (C)

48. आर्थिक मंदी का बुरा प्रभाव किन देशों पर पड़ा।

(A) विकसित देश

(B) अर्द्धविकसित देश

(C) विकासशील देश

(D) उपरोक्त में कोई नहीं

Ans – (A)

49. वर्तमान मंदी के कारण कौन-सा क्षेत्र प्रभावित हुआ?

(A) कृषि क्षेत्र

PDF SARTHI.COM

(B) उद्योग क्षेत्र

(C) सेवा क्षेत्र

(D) (A) और (B) दोनों

Ans – (C)

50. भारत का कौन-सा शहर सूचना प्रौद्योगिकी में विश्व के अग्रणी सूचना प्रौद्योगिकी की श्रेणी में आ गया है?

(A) मुम्बई

(C) कलकत्ता

(B) दिल्ली

(D) बंगलोर

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

6. वैश्वीकरण

1. विदेश व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों को जोड़ने अथवा उनके एकीकरण में किस प्रकार सहायक होता है?

उत्तर - प्राचीनकाल से ही विदेश व्यापार विभिन्न देशों को परस्पर जोड़ने का माध्यम रहा है। विदेश व्यापार उत्पादकों को घरेलू बाजारों, अर्थात देश के बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने का अवसर प्रदान करता है। इसी प्रकार दूसरे देशों में उत्पादित वस्तुओं के आयात से क्रेताओं के समक्ष घरेलू उत्पादन के साथ ही अन्य विकल्पों का विस्तार होता है। सामान्यतः, दो देशों के बीच मुक्त व्यापार होने से वस्तुओं का एक बाजार से दूसरे बाजार में आवागमन होता है। बाजार में वस्तुओं के विकल्प बढ़ जाते हैं। दो देशों के बाजार में एक ही वस्तु का मूल्य एकसमान होने लगता है। इसके फलस्वरूप सुदूर देशों के उत्पादक भी एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा कर सकते है। इस प्रकार, विदेश व्यापार विभिन्न देशों के बाजारों को जोड़ने अथवा उनके एकीकरण में सहायक सिद्ध हुआ है।

2. वैश्वीकरण को प्रभावित करनेवाले कारकों का उल्लेख करें। अथवा, प्रौद्योगिकी में होनेवाली प्रगति ने वैश्वीकरण को कैसे संभव बनाया है?

उत्तर - वैश्वीकरण को प्रभावित करनेवाले कारकों में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होनेवाली प्रगति महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, पिछले लगभग 50 वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में बहुत सुधार हुए हैं। इससे भारी और नाशवान वस्तुओं को भी सुदूर देशों में भेजना संभव हो गया है। लेकिन, वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करनेवाले कारकों में परिवहन प्रौद्योगिकी से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का विकास है। आज विश्व के प्रायः सभी भागों के उत्पादक, विक्रेता एवं ग्राहक एक-दूसरे से बहुत शीघ्र संबंध स्थापित कर सकते हैं। इससे केवल वस्तुओं के ही नहीं, वरन सेवाओं के बाजार का भी बहुत विस्तार हुआ है।

3. निजीकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - निजीकरण की धारणा विगत वर्षों के अंतर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था में किए है जानेवाले आर्थिक सुधारों से संबंधित है। यह इस विचारधारा के अनुरूप है कि सरकार का कार्य व्यवसाय करना नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का बहुत विस्तार हुआ है। लेकिन, सार्वजनिक क्षेत्र का कार्य संपादन आशा के अनुरूप - नहीं हो रहा है। इस क्षेत्र के अधिकांश उपक्रम घाटे में चल रहे हैं, अथवा बहुत कम लाभ अर्जित करते हैं। अतएव, अब भारत सरकार की विचारधारा एवं इसकी आर्थिक नीति निजीकरण के पक्ष में है। इसके फलस्वरूप

PDFSARTHI.COM

निजी क्षेत्र को अनेक प्रतिबंधों से मुक्त कर दिया गया है। अब निजी क्षेत्र कई ऐसी औद्योगिक क्रियाओं के संचालन में प्रवेश कर सकता है जो इसके पूर्व केवल सार्वजनिक क्षेत्र के लिए सुरक्षित थे। निजी क्षेत्र का विस्तार करने के लिए विदेशी कंपनियों को भी देश में अपने उद्यम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

वैश्वीकरण

1. भारत में वैश्वीकरण के पक्ष में तर्क दें।

उत्तर - भारत सरकार की वर्तमान आर्थिक नीति का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के लिए इसमें विश्व स्तर की प्रतिस्पर्द्धात्मक क्षमता का विकास करना है। यह सरकार की पूर्व नीतियों से भिन्न है जिसमें उद्योग और व्यापार पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए थे।

भारत के लिए वैश्वीकरण निम्नांकित कई कारणों से आवश्यक है।

(i) भारत की आंतरिक बचत पर्याप्त नहीं है। पूँजी की कमी हमारे देश के आर्थिक विकास में बाधक सिद्ध होती है। वैश्वीकरण से विदेशी पूँजी निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा।

(ii) वैश्वीकरण से भारतीय उद्योगों की उत्पादकता और कुशलता में भी वृद्धि होने की संभावना है। वैश्वीकरण से देश में बहुराष्ट्रीय निगमों का आगमन होता है। ये निगम अपने साथ नवीनतम तकनीक और प्रौद्योगिकी भी लाते हैं जिसके प्रभाव दूरगामी होते हैं।

(iii) वैश्वीकरण से देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता है। अतः, वे अपनी उत्पादन-विधियों में सुधार लाने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इस प्रकार, वैश्वीकरण हमारे देश की प्रतिस्पर्द्धात्मक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होगा।

(iv) भारत जैसे विकासशील देशों में श्रम का बाहुल्य होता है। अतः, वे अपनी निर्यात की वस्तुओं में श्रमप्रधान तकनीक का प्रयोग करते हैं। इससे मजदूरी की दरों तथा श्रमिकों के पारिश्रमिक में वृद्धि होती है।

2. भारत में वैश्वीकरण का वर्णन करें। अथवा, भारत में सामान्य व्यक्ति पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर - वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई बंद अर्थव्यवस्था विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ जुड़ती है। एक देश के बाजार का अन्य देशों के बाजारों के साथ एकीकरण से वस्तुओं, सेवाओं, प्रौद्योगिकी, पूँजी एवं श्रम

PDF SARTHI.COM

का निर्बाध प्रवाह (आदान-प्रदान) सरल हुआ है। भारत इससे अछूता न रहे, अतः नवीन आर्थिक नीति (1991) के अंतर्गत विदेशी व्यापार एवं पूँजी निवेश को उदार बनाया गया। अनावश्यक नियंत्रण, जिसमें लाइसेंस, कोटा आदि शामिल थे, हटा लिए गए। व्यापार शुल्क में भी कमी की गई।

वैश्वीकरण के कारण भारत का विदेशी व्यापार बढ़ा है। अब हम दुनिया के सभी देशों से व्यापार कर रहे हैं और अपने देश से कंप्यूटर सॉफ्टवेयर निर्यात कर रहे हैं। वैश्वीकरण के माध्यम से देश में विदेशी पूँजी निवेश बढ़ा है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपना उत्पादन केंद्र भारत में खोला है। इनमें फोर्ड, टोयोटा, सुजूकी, माइक्रोसॉफ्ट, ओरेकल, एडिडास, नाइकी आदि प्रमुख हैं। भारतीय उपभोक्ता के समक्ष वस्तुओं के विकल्प बढ़े हैं। प्रतिस्पर्द्धा से वस्तुओं में गुणात्मक सुधार तथा मूल्य में स्थिरता आई है। आउटसोर्सिंग के माध्यम से विशिष्टताप्राप्त कुशल श्रमिकों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए हैं।

3. एक बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा किसी देश में अपनी उत्पादन इकाई लगाने के निर्णय पर किन बातों का प्रभाव पड़ता है?

अथवा, बहुराष्ट्रीय निगमों ने किस प्रकार विभिन्न देशों के उत्पादन को जोड़ने का कार्य किया है?

उत्तर - बहुराष्ट्रीय निगमों का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ अर्जित करना होता है। अतः, वे उन्हीं देशों एवं स्थानों पर अपने कारखाने और संयंत्र की स्थापना करते हैं जो बाजार से निकट हैं, जहाँ कम पारिश्रमिक या वेतन पर कुशल एवं अकुशल श्रमिक उपलब्ध हैं तथा उत्पादन के अन्य कारकों की आपूर्ति सुनिश्चित है। इन स्थानों में वे कम लागत पर ही अपनी वस्तुओं का उत्पादन कर सकते हैं। ऐसे देशों में बहुराष्ट्रीय निगमों का निवेश बढ़ा है। इसके फलस्वरूप विभिन्न देशों के बीच विदेश व्यापार में भी बहुत तेजी से वृद्धि हो रही है। विदेश व्यापार का एक बड़ा भाग बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा नियंत्रित है। उदाहरण के लिए, 'फोर्ड मोटर्स' का कार-संयंत्र केवल भारत के लिए ही कारों का निर्माण नहीं करता, वरन यहाँ निर्मित कारों और कार के पार्ट-पुर्जों का विश्व के कई अन्य देशों में भी निर्यात होता है। इस प्रकार, बहुराष्ट्रीय निगमों के क्रियाकलाप से वस्तुओं और सेवाओं के बाजार का निरंतर विस्तार हो रहा है। इसके फलस्वरूप आर्थिक दृष्टि से सभी देश एक-दूसरे से जुड़ गए हैं। विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण या युग्मन की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय निगमों की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनकी आर्थिक गतिविधियों से सुदूर स्थानों का उत्पादन भी प्रभावित हुआ है तथा वे एक-दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं।

PDFSARTHI.COM

4. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किस प्रकार दूसरे देशों में उत्पादन पर स्वामित्व या नियंत्रण स्थापित करती हैं?

उत्तर - बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने देश के बाहर दूसरे देशों में भी पूँजी का निवेश कर उत्पादन पर नियंत्रण या स्वामित्व स्थापित करती हैं। इन कंपनियों के निवेश का सबसे सामान्य तरीका अन्य देशों की स्थानीय कंपनियों को खरीदना और उसके पश्चात उत्पादन का विस्तार करना है। ये कंपनियाँ प्रायः ऐसी उत्पादन इकाइयों को खरीदती हैं जिनमें विस्तार की पर्याप्त संभावनाएँ वर्तमान होती है।

कई बार बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अन्य देशों की स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। इससे उन्हें आधारभूत संरचना के सृजन में अपना समय नष्ट नहीं करना पड़ता है और वे शीघ्र उत्पादन प्रारंभ कर सकती हैं। भारतीय उद्यमियों के पास पूँजी का अभाव है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ उन्हें मशीन आदि में निवेश के लिए पूँजी प्रदान करने के साथ ही नवीनतम प्रौद्योगिकी भी प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिकी कंपनी 'फोर्ड मोटर्स' विश्व की सबसे बड़ी कार-निर्माता कंपनी है। कुछ समय पूर्व इस कंपनी ने चेन्नई के निकट एक विशाल कार-संयंत्र की स्थापना की है। यह संयंत्र भारत में जीप, कार और ट्रकों के प्रमुख निर्माता 'महिंद्रा एंड महिंद्रा' के सहयोग से स्थापित किया गया है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एक अन्य तरीके से भी उत्पादन का नियंत्रण करती हैं। वस्त्र, जूते-चप्पल, खेल और सजावट के सामान आदि ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका अनेक देशों में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन छोटे उत्पादकों द्वारा अपनी देखरेख में उत्पादन करने की व्यवस्था करती हैं तथा इनके तैयार माल को खरीदकर अपने व्यापारिक नाम से विभिन्न देशों में बेचती हैं।

5. विश्व व्यापार संगठन (WTO) क्या है? यह कब और क्यों स्थापित किया गया?

उत्तर - विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization, WTO) विश्व के प्रमुख देशों की एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जिसका उद्देश्य विदेश व्यापार के विस्तार के लिए इसे यथासंभव मुक्त एवं स्वतंत्र बनाना है। इसकी स्थापना 1995 में हुई। द्वितीय महायुद्ध के समय विश्व के प्रायः सभी देशों में विदेशी व्यापार पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए गए थे। इन प्रतिबंधों के कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापार का क्षेत्र संकुचित होता जा रहा था। अतः, अंतरराष्ट्रीय व्यापार की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए 1947 में जेनेवा सम्मेलन में एक समझौता हुआ। यह समझौता 'सामान्य प्रशुल्क एवं व्यापार समझौता' (GATT) कहा गया। अब इसका स्थान विश्व व्यापार संगठन ने ले लिया है। वर्तमान में 161 राष्ट्र विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं। इसका मुख्यालय जेनेवा में है।

PDF SARTHI.COM

6. वैश्वीकरण

1. वैश्वीकरण का अर्थ है

(A) विदेशी पूँजी एवं विनियोग पर रोक

(B) व्यापार, पूँजी, तकनीक हस्तांतरण, सूचना प्रवाह द्वारा देश की अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ समन्वय

(C) सरकारीकरण को बढ़ावा

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans- (B)

2. वैश्वीकरण को कहा जाता है-

(A) भूमंडलीकरण

(B) W.TO

(C) निजीकरण

(1)) उदारीकरण

Ans- (A)

3. वैश्वीकरण के फलस्वरूप दो देशों के उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा-

(A) कम होगी

(B) बढ़ जाएगी

(C) घटती-बढ़ती रहेगी

(D) कोई परिवर्तन नहीं होगा

PDF SARTHI.COM

Ans- (B)

4. इनमें से क्या वैश्वीकरण को दोष नहीं है?

(A) सामाजिक कल्याण की उपेक्षा

(B) एकाधिकार में वृद्धि

(C) आर्थिक असमानता में वृद्धि

(D) उद्यमियों को प्रोत्साहन

Ans- (D)

5. वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करने वाले प्रमुख कारक हैं

(A) प्रतिस्पर्द्धा

(B) उदारवादी नीतियाँ

(C) विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के अनुभव

(D) उपर्युक्त सभी

Ans- (D)

6. वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषता उद्देश्य है

(A) वस्तुओं का मुक्त प्रवाह

(B) पूँजी का मुक्त प्रवाह

(C) प्रौद्योगिकी का मुक्त प्रवाह

(D) इनमें सभी

Ans- (D)

PDFSARTHI.COM

7. भारत में स्थित कॉल सेंटर किस उद्देश्य से कार्यरत रहते हैं?

(A) आपराधिक गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए

(B) ग्राहक सेवा के लिए

(C) रोगी उपचार कार्य के लिए

(D) 'A' और 'B' दोनों

Ans- (B)

8. अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के एकीकरण को कहते हैं।

(A) उदारीकरण

(B) निजीकरण

(C) वैश्वीकरण

(D) इनमें कोई नहीं

Ans- (C)

9. विश्व व्यापार संगठन के वर्तमान सदस्यों की संख्या कितनी है?

(A) 164

(B) 137

(C) 147

(D) 198

Ans- (A)

10. व्यापार, पूँजी, तकनीक एवं सूचना के प्रवाह से प्रोत्साहन मिलता है-

PDF SARTHI.COM

(A) निजीकरण

(B) वैश्वीकरण

(C) उदारीकरण

(D) इनमें से सभी

Ans- (B)

11. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्बन्धी नियमों को निर्धारित करने वाली संस्था कौन है?

(A) विश्व बैंक

(B) आई०एम०एफ०

(C) युएनओ

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans- (D)

12. सन् 2009 तक विश्व की वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल विदेशी व्यापार में भारत का अंश कितना प्रतिशत था?

(A) 20%

(B) सिर्फ 2%

(C) 40%

(D) 10%

Ans- (B)

13. जब एक विशालकाय भवन को बाजार के रूप में बदल दिया जाता है तो वह कहलाता है -

(A) मंडी

PDF SARTHI.COM

(B) दुकान

(C) शॉपिंग मॉल

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans- (C)

14. किस अर्थशास्त्री ने उदार आर्थिक नीति का समर्थन किया था?

(A) मार्शल

(B) एडम स्मिथ

(C) पीगू

(D) रॉबिन्स

Ans- (B)

15. उदारीकरण का तात्पर्य है-

(A) अर्थव्यवस्था में आर्थिक नियंत्रणों को समाप्त करना

(B) MRTP Act से छूट

(C) निजी क्षेत्र के उद्योगों का विस्तार

(D) उपर्युक्त सभी

Ans- (C)

16. इनमें से कौन-सी बहुराष्ट्रीय कंपनी है?

(A) फोर्ड मोटर्स

(B) सैमसंग

PDFSARTHI.COM

(C) कोका-कोला

(D) इनमें से सभी

Ans- (D)

17. नई आर्थिक नीति के घटक हैं-

(A) निजीकरण एवं वैश्वीकरण

(B) वैश्वीकरण एवं उदारीकरण

(C) उदारीकरण एवं निजीकरण

(D) उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण

Ans- (D)

18. बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा दूसरे देशों में निवेश श सबसे सामान्य तरीका है-

(A) नए कारखानों की स्थापना

(B) स्थानीय कंपनियों को खरीद लेना

(C) स्थानीय कंपनियों से साझेदारी

(D) इनमें सभी

Ans- (D)

19. पारले ग्रुप के 'थम्स अप' नामक ब्रांड को किस बहुराष्ट्रीय कंपनी ने खरीद लिया?

(A) कोका-कोला

(B) एल० जी०

(C) रिबॉक

PDF SARTHI.COM

(D) नोकिया

Ans- (D)

20. इनमें से कौन भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी है?

(A) नोकिया

(C) सैमसंग

(B) डाबर

(D) इनमें कोई नहीं

Ans- (A)

21. निजीकरण का क्या तात्पर्य है?

(A) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों को निजी के हाथ हस्तांतरित करना

(B) निजी क्षेत्र पर से अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाना

(C) निजी क्षेत्र को महत्त्वपूर्ण भूमिका

(D) उपर्युक्त सभी के हाथ हस्तांतरित करना

Ans- (B)

22. निम्न में से कौन विदेशी ब्रांड नहीं है?

(A) हुंडई

(B) टोयोटा

(C) फोर्ड

(D) टाटा

PDF SARTHI.COM

Ans- (A)

23. बेश्विक गाँव किस युग की अवधारणा है?

(A) आधुनिक

(B) पाषाण

(C) प्राचीन

(D) मध्य

Ans- (D)

24.इनमें कौन भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी है?

(A) एप्पल

(B) रिवॉक

(C) सैमसंग

(D) टाटा

Ans- (A)

25. वैश्वीकरण के मुख्य अंग कितने हैं?

(A) एक

(B) दो

(C) पाँच

(D) चार

Ans- (D)

PDFSARTHI.COM

26. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय कहाँ है?

(A) जेनेवा

(B) पेरिस

(C) न्यूयार्क

(D) वाशिंगटन

Ans- (C)

27. विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना कब हुई?

(A) 1991 ई०

(B) 1993 ई०

(C) 1995 ई०

(D) 1997 ई०

(D) 1997 इ०

Ans- (A)

28. निम्नलिखित में से क्या नई आर्थिक नीति का अंग नहीं है?

(A) निजीकरण

(B) वैश्वीकरण

(C) राष्ट्रीयकरण

(D) उदारीकरण

Ans- (C)

PDF SARTHI.COM

29. भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया कब शुरू हुई?

(A) 1991

(B) 1980

(C) 1992

(D) 1996

Ans- (C)

30. हमारे देश का कौन-सा शहर सूचना प्राद्योगिकी का केन्द्र बन गया है?

(A) बंगलुरु

(B) दिल्ली

(C) मुंबई

(D) चेन्नई

Ans- (A)

31. पूरे विश्व में आर्थिक वर्चस्व है -

(A) ब्रिटेन का

(B) अमेरिका का

(C) फ्रांस का

(D) रूस का

Ans- (A)

32. अमेरिका से पहले किस देश की पूरी दुनिया पर राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व बना हुआ था?

PDF SARTHI.COM

(A) भारत

(B) ब्रिटेन

(C) फ्रांस

(D) रूस

Ans- (B)

33. वैश्वीकरण से बिहार के किस उनको क प्रोत्साहन मिला है?

(A) कृषि एवं पशुपालन

(B) पर्यटन

(C) विनिर्माण

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans- (B)

34. वैश्वीकरण का सबसे नकारात्मक प्रभाव किय क्षेत्र में देखा गया है?

(A) कृषि एवं ग्रामीण

(B) रोजगार

(C) बैंक

(D) उद्योग

Ans- (B)

35. निम्नलिखित में से किस राज्य में आधार संरचना के कारण वैश्वीकरण का प्रभाव कम है?

(A) बिहार

PDF SARTHI.COM

(B) उत्तरप्रदेश

(C) मध्यप्रदेश

(D) राजस्थान

Ans- (A)

36. बिहार में कितना प्रतिशत निवेश में वृद्धि हुई है?

(A) 147%

(B) 145%

(C) 150%

(D) 143%

Ans- (A)

PDF SARTHI.COM

7. उपभोक्ता जागरण एवं संरक्षण

1. उपभोक्ता कौन है ? संक्षेप में बताइए ।

उत्तर - किसी बाजार अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता माँग पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। वस्तुओं तथा सेवाओं का क्रय करनेवाला व्यक्ति उपभोक्ता है। क्रय का उद्देश्य आवश्यकताओं की पूर्ति तथा इच्छाओं की संतुष्टि है। बाजार व्यवस्था में उपभोक्ता का स्थान सर्वोपरि है। उत्पादन की सारी क्रियाएँ उपभोक्ता की इच्छा से संचालित होती हैं। यदि वह किसी वस्तु की खरीद के लिए पैसा खर्च करने को तैयार है, तो उस वस्तु का उत्पादन बढ़ेगा। इसके विपरीत, यदि वह किसी वस्तु की खरीद पर खर्च घटा दे तो उस वस्तु का उत्पादन घट जाएगा। इस दृष्टिकोण से उपभोक्ता बाजार का सर्वेसर्वा है, किंतु इस व्यवस्था की प्रभाविता उपभोक्ता की जागरूकता पर निर्भर करती है। उसे वस्तु के गुण, मूल्य, निर्माण विधि, मानक चिह्न आदि पर पैनी नजर रखनी होगी अन्यथा वह व्यापारियों के अनुचित व्यवहार, ठगी या शोषण का शिकार हो सकता है।

2. बाजार में उपभोक्ता के कुछ कर्तव्यों का वर्णन करें।

उत्तर - बाजार में एक उपभोक्ता को निम्नलिखित कर्तव्यों को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है।

(i) उपभोक्ताओं को क्रय विक्रय की जानेवाली वस्तुओं के व्यावसायिक पक्षों के साथ ही सुरक्षा एवं स्वास्थ्य आदि पर उनके प्रभावों की जानकारी होनी चाहिए।

(ii) जहाँ कहीं भी संभव हो, खरीदे गए सामान या सेवा की रसीद अवश्य लेनी चाहिए।

PDF SARTHI.COM

(iii) अनेक स्थानों पर सरकार अथवा अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा उपभोक्ता संघों की स्थापना की गई है। उपभोक्ताओं को उनके कार्यकलाप में रुचि लेनी चाहिए।

(iv) उपभोक्ताओं को अपने अधिकारों की जानकारी होनी चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग भी करना चाहिए ।

3. पैकेट बंद खाद्य पदार्थ खरीदते समय आप कौन-कौन-सी मुख्य बातों को ध्यान में रखेंगे? बिंदुवार उल्लेख करें।

उत्तर - आज बाजार में प्रायः अनेक खाद्य पदार्थ पैकेट में उपलब्ध हैं। एक उपभोक्ता को इन्हें खरीदते समय इन बातों की जानकारी ले लेनी चाहिए— (i) वस्तु के अवयवों की सूची, (ii) अधिकतम खुदरा मूल्य, (iii) शुद्ध वजन या परिमाण, (iv) निर्माता का नाम और पता, (v) निर्माण की तिथि, (vi) उपयोग करने की अंतिम तिथि, (vii) निरामिष/सामिष चिह्न, (viii) डाले गए रंग आदि की घोषणा, (ix) पौष्टिक तत्त्वों की मात्राएँ तथा (x) शिशु आहार आदि पदार्थों के लिए वैधानिक चेतावनी ।

4. उपभोक्ता शोषण के मुख्य कारण क्या हैं?

उत्तर - उपभोक्ता शोषण के कई कारण हैं। बाजार में कई बार कुछ वस्तुओं का अभाव हो जाता है। इस स्थिति का अनुचित लाभ उठाकर विक्रेता अपनी वस्तुओं का अधिक मूल्य वसूल करते हैं। विज्ञापन एवं प्रचार भी उपभोक्ताओं के शोषण का एक प्रमुख कारण है। इससे उपभोक्ता ऐसी वस्तुओं को भी खरीद लेते हैं जिनकी उन्हें तत्काल कोई आवश्यकता नहीं होती है। अशिक्षा के कारण अर्द्धविकसित देशों के अधिकांश उपभोक्ता अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हैं। यह उनके शोषण का एक मुख्य कारण है।

PDF SARTHI.COM

5. उपभोक्ता संरक्षण के लिए सरकार द्वारा गठित न्यायिक प्रणाली को विस्तार से समझाएँ ।

उत्तर - उपभोक्ताओं के अधिकारों की सुरक्षा तथा उनके शोषण को रोकने के लिए भारत सरकार ने 1986 में 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' पारित किया। इस अधिनियम के अंतर्गत उपभोक्ताओं के संरक्षण के लिए एक अर्द्धन्यायिक तंत्र गठित किया गया है।

इस न्यायिक तंत्र का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं की शिकायतों को शीघ्रता से कम खर्च में दूर करना है। इसके द्वारा उत्पादकों एवं विक्रेताओं को दंड देने के स्थान पर उपभोक्ताओं की क्षतिपूर्ति की व्यवस्था की गई है। यदि किसी वस्तु या सेवा का मूल्य तथा उपभोक्ताओं को दी जानेवाली क्षतिपूर्ति की राशि 20 लाख रुपये तक है तब इसकी शिकायत जिला फोरम में दर्ज कराई जा सकती है। किसी वस्तु या सेवा का मूल्य और क्षतिपूर्ति की राशि 20 लाख रुपये से अधिक तथा 1 करोड़ रुपये तक होने पर उसकी शिकायत राज्य आयोग में की जा सकती है। वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य 1 करोड़ रुपये से अधिक होने पर उपभोक्ता राष्ट्रीय आयोग में शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

उपभोक्ता जागरण एवं संरक्षण

1. उपभोक्ताओं का किस प्रकार शोषण किया जाता है? उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए सरकार द्वारा कौन-कौन से उपाय किए गए हैं?

उत्तर - भारत में उपभोक्ताओं का शोषण कई प्रकार से किया जाता है। उत्पादक या विक्रेता कई बार अनुचित व्यापारिक व्यवहार करते हैं। उदाहरण के लिए, वे वस्तुओं की माप-तौल में कमी करते हैं, ग्राहकों से वस्तुओं के निर्धारित खुदरा मूल्य से अधिक मूल्य

PDFSARTHI.COM

वसूल करते हैं या निम्न स्तर की वस्तुओं का विक्रय करते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती हैं।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत हमारे देश के उपभोक्ताओं को ये अधिकार दिए गए हैं- (i) जान-माल के लिए खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री के विरुद्ध संरक्षण का अधिकार, (ii) वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता, मात्रा, मानक और मूल्य-संबंधी सूचना का अधिकार, (iii) विभिन्न वस्तुओं को देख-परख कर चुनाव करने तथा प्रतिस्पर्द्धात्मक मूल्यों पर उन्हें प्राप्त करने का अधिकार, (iv) उपभोक्ताओं को उचित स्थान पर अपनी शिकायत दर्ज कराने का अधिकार, (v) अनुचित व्यापार तरीकों एवं शोषण के विरुद्ध न्याय पाने का अधिकार तथा (vi) उपभोक्ता प्रशिक्षण का अधिकार।

2. उपभोक्ताओं के संरक्षण हेतु सरकार ने क्या उपाय किए हैं?

उत्तर - उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सरकार द्वारा तीन प्रकार के उपाय किए गए हैं- कानूनी, प्रशासनिक एवं तकनीकी। इसके लिए सरकार ने जो कानूनी उपाय किए हैं उनमें 1986 का 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इस अधिनियम में उपभोक्ता शोषण के लिए क्षतिपूर्ति की व्यवस्था की गई है। उपभोक्ता शोषण को रोकने के लिए कुछ प्रशासनिक उपाय भी किए गए हैं। इसके लिए सरकार ने देश में एक व्यापक सार्वजनिक वितरण प्रणाली की व्यवस्था की है तथा इसके द्वारा वह अनिवार्य उपभोक्ता पदार्थों का वितरण करती है। उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा के लिए उत्पादों का मानकीकरण एक तकनीकी उपाय है। इसके लिए सरकार ने कुछ ऐसी संस्थाओं की स्थापना की है जो उत्पादों की गुणवत्ता की जाँच कर उनका मानक निर्धारित करती हैं।

PDFSARTHI.COM

जैसा कि हाल में कुछ खाद्य पदार्थों द्वारा तय मानक की अवहेलना जाँच में सामने आई। सरकार ने कार्रवाई करते हुए उस खाद्य पदार्थ की बिक्री पर रोक लगा दिया।

3. 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986' की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर - उपभोक्ताओं के अधिकारों की सुरक्षा एवं उनके शोषण को रोकने के लिए सरकार ने 1986 में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

(i) अधिनियम के अंतर्गत अनुचित व्यापार तरीकों का प्रयोग करनेवाले उत्पादकों एवं विक्रेताओं को दंड देने के स्थान पर उपभोक्ताओं की क्षतिपूर्ति की व्यवस्था की गई है।

(ii) इसके लिए इस अधिनियम में राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर एक अर्द्धन्यायिक तंत्र गठित किया गया है।

(iii) यह अधिनियम वस्तुओं और सेवाओं दोनों के क्रय-विक्रय पर लागू होता है।

(iv) इसका उद्देश्य उपभोक्ताओं की शिकायतों को शीघ्रता से कम खर्च में दूर करना है।

4. 'मानवाधिकार' के महत्त्व पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर - मानवाधिकार का संबंध किसी देश के नागरिकों के मूलभूत अधिकारों से है। इनकी सुरक्षा के लिए हमारे देश में 'राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग' की स्थापना की गई है। अन्य विकासशील देशों के समान ही हमारे देश के निर्धन एवं कमजोर वर्ग के लोगों का कई प्रकार से शोषण होता है। भारतीय संविधान देश के सभी नागरिकों को समान सुविधा तथा समान अवसर का अधिकार प्रदान करता है। परंतु, आवश्यक कानून होने पर भी वे

PDFSARTHI.COM

समान सुविधा तथा समान अवसर से वंचित हो जाते हैं। अतएव, हमारे समाज में बेसहारा और कमजोर वर्ग के मौलिक अधिकारों की प्रभावपूर्ण सुरक्षा के लिए इस प्रकार के एक आयोग का गठन करना आवश्यक था।

हमारे संविधान में सात मौलिक अधिकार दिए गए हैं जिनमें समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार तथा आर्थिक शोषण से संरक्षण के अधिकार शामिल हैं। इन अधिकारों का हनन होने पर कोई भी व्यक्ति मानवाधिकार आयोग को आवेदन दे सकता है। इस आयोग का महत्त्व इस कारण और बढ़ जाता है कि मानवाधिकारों का उल्लंघन होने पर यह स्वयं भी संज्ञान ले सकता है। उदाहरण के लिए, बिहार मानवाधिकार आयोग ने पिछले लगभग एक वर्ष में भूख से मौत, सामाजिक सुरक्षा नियमों की अवहेलना तथा निर्धनता निवारण योजनाओं के कार्यान्वयन जैसे मामलों में स्वतः संज्ञान लेकर प्रभावी हस्तक्षेप किया है।

5. दो उदाहरणों द्वारा उपभोक्ता जागरूकता की जरूरतों का वर्णन करें।

उत्तर - अपने अधिकारों एवं दायित्वों की जानकारी नहीं रहने के कारण प्रायः उपभोक्ता शोषण के शिकार हो जाते हैं। अतः, उनके शोषण को रोकने और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए उन्हें जागरूक बनाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, मनुष्य के स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए चिकित्सा सेवाएँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उपभोक्ता के रूप में एक मरीज को भी उचित इलाज और सुरक्षित रहने का अधिकार - है। यदि चिकित्सक मरीजों के इलाज में लापरवाही करते हैं या उनका सही इलाज नहीं करते तो मरीज को क्षतिपूर्ति का अधिकार है। इसके दो उदाहरण नीचे दिए गए है।

PDFSARTHI.COM

पटना के एक शल्यचिकित्सक ने एक महिला के पेट का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन पूरा होने के कुछ दिनों बाद ही महिला के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। जाँच करने पर पता चला कि ऑपरेशन के दौरान शल्यचिकित्सक ने लापरवाही से एक छोटा तौलिया उस महिला के पेट के अंदर ही छोड़ दिया था। उस महिला के - परिवार वाले जागरूक थे और उन्होंने जिला फोरम में शल्यचिकित्सक के विरुद्ध केस दायर कर दिया। जिला फोरम में उस केस को खारिज कर दिया गया। वहाँ से केस खारिज होने के बाद उनके परिवार वालों ने राज्य उपभोक्ता आयोग में अपील की, जिसने चिकित्सक को लापरवाही का दोषी पाया और उक्त महिला को हर्जाना देने का आदेश दिया।

इसी प्रकार, हमारे देश में अनेक निजी शिक्षण संस्थान हैं जो गलत एवं भ्रामक प्रचार कर छात्रों का शोषण करते हैं। उदाहरण के लिए, संगीता नामक एक छात्रा ने एक निजी कोचिंग संस्थान के दो वर्षीय पाठ्यक्रम में 60 हजार रुपये देकर नामांकन कराया। लेकिन, पढ़ाई मानक स्तर की नहीं होने के कारण वर्ष के अंत में उसने पाठ्यक्रम छोड़ देने का निर्णय लिया। जब उसने संस्थान से एक वर्ष का बाकी शुल्क लौटाने का अनुरोध किया, तब उस संस्थान ने बाकी शुल्क लौटाने से इनकार कर दिया। अतः, संगीता ने जिला उपभोक्ता फोरम में मुकदमा दायर किया जिसने उस - कोचिंग संस्थान को 30 हजार रुपये लौटाने का आदेश दिया।

6. उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए किए गए उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- भारत में उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए तीन प्रकार के उपाय अपनाए गए हैं- कानूनी, प्रशासनिक एवं तकनीकी कानूनी उपायों में 1986 का उपभोक्ता संरक्षण

PDFSARTHI.COM

अधिनियम सबसे महत्वपूर्ण है। इस संबंध में सरकार द्वारा कई अन्य कानून भी बनाए गए हैं और समय-समय पर उनमें आवश्यक संशोधन किया गया है। अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं का 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' द्वारा वितरण एक प्रशासनिक उपाय है। वस्तुओं का मानकीकरण तकनीकी उपाय है।

(i) उपभोक्ता अधिकारों से संबंधित कानून- भारत सरकार ने उपभोक्ताओं के अधिकारों सुरक्षा के लिए समय-समय पर कई कानून लागू किए हैं। इनमें माप-तौल मानक अधिनियम, खाद्य मिलावट-निवारण अधिनियम, आवश्यक वस्तु अधिनियम आदि महत्वपूर्ण हैं। परतु, उपभोक्ता अधिकारों की सुरक्षा के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। यह अधिनियम सभी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के विक्रय पर लागू होता है।

(ii) **सार्वजनिक वितरण प्रणाली-** वितरण प्रणाली उपभोक्ता संरक्षण के लिए सरकार ने प्रशासनिक उपाय भी किए हैं। इनके शोषण को रोकने के लिए सरकार ने देश में एक व्यापक सार्वजनिक वितरण प्रणाली की स्थापना की है। इससे वस्तुओं की कालाबाजारी, जमाखोरी और मुनाफारबोरी को रोकने में सहायता मिली है।

(iii) वास्तुओं बना मानकीकरणा- उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सरकार ने ऐसी संस्थाओं की स्थापना की है जो विभिन्न उत्पादों का मानक निर्धारित करती है। इसके साथ वे इनकी गुणवत्ता की जाँच भी करती है।

7. यदि उपभोक्ता जिल्ला अदालत के निर्णय से संतुष्ट नहीं है तो वह कब और कहाँ अपील कर सकता है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर- यदि कोई उपभोक्ता जिला अदालत के निर्णय से संतुष्ट नहीं है तो वह इसके विरुद्ध राज्य आयोग में अपील कर सकता है। यह अपील जिला अदालत के निर्णय के 30 दिनों के भीतर होनी चाहिए। इसमें अपील करनेवाले उपभोक्ता के आवेदनपत्र के साथ जिला अदालत का आदेश संलग्न करना आवश्यक है। इसके साथ ही, इसमें उन कारणों का उल्लेख होगा चाहिए जिनके लिए यह अपील की जा रही है। अपील करने के लिए उपभोक्ताओं को कोई शुल्क नहीं देना पड़ता है। इस अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, अपील का निर्णय उसे दर्ज कराने के लिदन से 90 दिनों के पूर्व हो जाना चाहिए।

8. "भारत में उपभोक्ताओं के शोषण की समस्या बहुत गंभीर है।" क्यों ?

उत्तर- भारत में उपभोक्ताओं के शोषण की समस्या बहुत गंभीर है। हमारे देश के अधिकांश उपभोक्ता अशिक्षित है तथा उनकी आय का स्तर बहुत निम्न है। इसके फलस्वरूप, वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होते। देश में आवश्यक उपभोक्ता पदार्थों का अभाव होने के कारण उन्हें अनेक वस्तुओं और सेवाओं को अधिक मूल्य पर खरीदना पड़ता है अथवा उनके उपभोग से वंचित रह जाना पड़ता है। भारत में उपभोक्ता संघों का पूर्ण अभाव है। उत्पादक एवं व्यापारी इसका अनुचित लाभ उठाकर उपभोक्ताओं का कई प्रकार से शोषण करते हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में कानूनी प्रक्रिया बहुत जटिल और खर्चीली है। इसके फलस्वरूप भी इन देशों में उपभोक्ताओं का शोषण होता है।

PDFSARTHI.COM

1. उपभोक्ता द्वारा शिकायत करने के लिए आवेदन शुल्क कितन्ता लगता है ?

(A) 50 रु०

(B) 70 रु०

(C) 10 रु०

(D) शुल्क नहीं लगता

Ans-(D)

2. सूचना का अधिकार किस प्रकार का अधिकार है ?

(A) वैधानिक

(B) कानूनी

(C) धार्मिक

(D) परम्परागत

Ans-(A)

3. भारतीय उपभोक्ता संरक्षण अधिनविन की घोषणा कब हुई ?

(A) 1986 में

(B) 1980 में

PDF SARTHI.COM

(C) 1987 में

(D) 1988 में

Ans-(A)

4. विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस प्रति वर्ष कब मनाया जाता है

(A) 17 मार्च

(B) 15 मार्च

(C) 19 अप्रैल

(D) 22 अप्रैल

Ans-(B)

5. स्वर्णाभूषणों की परिशुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए किस मान्यता प्राप्त चिह्न का होना आवश्यक है ?

(A) IS.I.

(B) हॉलमार्क

(C) एग मार्क

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(B)

PDF SARTHI.COM

6. यदि किसी सेवा या वस्तु का मूल्य 20 तब से अधिक तथा करोड़ से कम है तो उपभोक्ता शिकायत कहाँ दर्ज करेगा ?

(A) जिला फोरम

(B) राज्य आयोग

(C) राष्ट्रीय आयोग

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(B)

7. उपभोक्ता शोषण को मुख्य कारक कौन - से है ?

(A) मिलावट की समस्या।

(B) तौल की समस्या।

(C) कम गुणवत्ता

(D) उपर्युक्त सभी

Ans-(D)

8. उपभोक्ता राहत के निम्नलिखित में कौन से तरीके है।

(A) सामान से खराबी हटाना

(B) सामान को बदलना तरीका

PDF SARTHI.COM

(C) सेवाओं में त्रुटि हटाना

(D) उपर्युक्त सभी साझेदारी

Ans-(D)

9. उपभोक्ता जागरूकता हेतु आकर्षक नारे ?

(A) जागो ग्राहक जागो

(B) ग्राहक सावधान

(C) अपने अधिकारों की पहचानो ।

(D) उपर्युक्त सभी

Ans-(D)

10 उपभोक्ता निम्नलिखित में किस कारण शोषण के शिकार होते हैं।

(A) शिक्षा की कमी

(B) गरीवी की प्रभाव

(C) जागरूकता का अभाव

(D) उपर्युका सभी

Ans-(D)

PDF SARTHI.COM

11. भारत में उपभोक्ता के संरक्षण हेतु कौन सा अधिनियम है ?

(A) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1966

(B) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1976

(C) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(C)

12. वर्तमान में भारत में जिला फोरम है।

(A) 402

(B) 498

(C) 582

(D) 662

Ans-(C)

13. वर्तमान में देश में उपभोक्ता के विवादों के निपटारा के लिए कितने राज्य आयोग काम कर रहे हैं

(A) 35

(B) 45

PDF SARTHI.COM

(C) 65

(D) 86

Ans-(A)

14. राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन निम्नलिखित में किस उदेश्य की प्राप्ति के लिए की गईहै ?

(A) महिलाओं के ऊपर हुए अत्याचार संबंधी शिकायत के निवारण हो

(B) महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए

(C) प्रशासन में महिलाओं की सहभागिता के लिए

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(A)

15. " ग्राहक हमारी दुकान में आनेवाला सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है। हम पर निर्भर नहीं हम उन पर निर्भर हैं।" यह किसका वक्तव्य है ?

(A) महात्मा गाँधी

(B) जवाहरलाल नेहरू

(C) अबुल कलाम

(D) इनमें से कोई नहीं

PDFSARTHI.COM

Ans-(A)

16. बाजार का महत्वपूर्ण अंग है

(A) उपभोक्ता

(B) गायक

(C) नौकर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(A)

17. उपभोक्ता को निम्न में किसकी जानकारी आवश्यक है ?

(A) वस्तु का गुण

(B) वस्तु की मात्रा

(C) गुणवत्ता

(D) उपर्युक्त सभी

Ans-(D)

18. जागो ग्राहक जागो एक नारा है –

(A) उपभोक्ता जागरण का

PDF SARTHI.COM

(B) व्यवसाई जागरण का

(C) कृषक जागरण का

(D) जागरण का

Ans-(A)

19, उपभोक्ताओं का सदैव होता है

(A) शोषण

(B) दोहन

(C) उत्पीड़न

(D) उपर्युक्त सभी

Ans-(D)

20, उपभोक्ता जागरण आन्दोलन सर्व प्रथम किस देश में प्रारंभ हुआ

(A) भारत

(B) संयुक्त राज्य अमेरिका

(C) इंग्लैंड

(D) फ्रांस

PDF SARTHI.COM

Ans-(C)

21. उपभोक्ता अधिकारों की घोषणा सर्वप्रथम किस देश में हुई ?

(A) जर्मनी

(B) जापान

(C) संयुक्त राज्य अमेरिका

(D) रूस

Ans-(C)

22. उपभोक्ताओं के शोषण का मुख्य कारण क्या है ?

(A) भ्रामक प्रचार

(B) मिलावट

(C) वजन में कमी

(D) उपर्युक्त सभी

Ans-(A)

23. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत उपभोक्ताओं की अपील सुनने का अधिकार किसे है।

(A) राष्ट्रीय आयोग को

PDF SARTHI.COM

(B) राज्य आयोग को

(C) जिला फोरम को

(D) इनमें से सभी को

Ans-(D)

24. उपभोक्ता को जानकारी लेनी चाहिए, किसी वस्तु को

(A) गुण का

(B) मात्रा का

(C) निर्माण सामग्री का

(D) इनमें सभी

Ans-(D)

25, उत्पादन की समस्त क्रिया निर्भर करती है

(A) विक्रेता पर

(B) उपभोक्ता पर

(C) छात्र पर

(D) किसी पर नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans-(B)

26. भारतीय उपभोक्ताओं में अधिकांशतः है

(A) विक्रेता पर

(B) उपभोक्ता पर

(C) छात्र पर

(D) किसी पर नहीं

Ans-(A)

27. भारतीय उपभोक्ताओं में अधिकांशतः हैं

(A) निष्क्रिय

(B) जागरूक

(C) सक्रिय

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(B)

28. सामान खरीदते समय हमें प्राप्त करना चाहिए

(A) रसीद

PDF SARTHI.COM

(B) गारंटी कार्ड

(C) वारंटी कार्ड

(D) उपर्युक्त सभी

Ans-(D)

29, उपभोक्ता शिकायत निवारण हेतु व्यवस्था है

(A) तृस्तरीय

(B) द्विस्तरीय

(C)'a' और 'b' दोनों

(D) इनमें से कोई

Ans-(A)

30. खाद्य तेल की गुणवत्ता का मानक चिह क्या ?

(A) एगमार्क

(B) हॉलमार्क

(C) IS मार्क

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans-(A)

31. प्रामाणिक खाद्य उत्पादों का मानक चिह्न क्या है

(A) एगमार्क

(B) हॉलमार्क

(C) ISI मार्क

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans-(A)

32. उपभोक्ता इन्टरनेशनल की स्थापना कब हुई ?

(A) 1982 में

(B) 1983 में

(C) 1984 में

(D) 1985 में

Ans-(D)

33. उपभोक्ता आंदोलन का प्रवर्तक किसको माना जाता है?

(A) बिल क्लिंटन

PDF SARTHI.COM

(B) जार्ज बुश

(C) रॉल्फ नादर

(D) मेक्लेगन

Ans:-(C)

34. किसी वस्तु के ग्राहक जो वस्तुओं एवं सेवाओं का उपयोग करते हैं उन्हें.......... कहा जाता है।

(A) उपभोक्ता

(B) क्रेता

(C) व्यवसायी

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans:-(A)

35. उपभोक्ता जागरण के लिए सरकार का सबसे प्रचलित नारा है-

(A) 'जागो ग्राहक जागो'

(B) 'धोखाधड़ी से बचो

(C) अपने अधिकारों को पहचानो'

(D) 'सजग उपभोक्ता बनो'

PDF SARTHI.COM

Ans:-(A)

36. किसने कहा, "ग्राहक हमारी दुकान में आने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। वह हम पर निर्भरनहीं, हम उन पर निर्भर हैं।"

(A) पंडित जवाहरलाल नेहरू

(B) राजीव गाँधी

(C) महात्मा गाँधी

(D) ए०पी० जे० अब्दुल कलाम

Ans:-(C)

37. 'उपभोक्ता जागरण किसके प्रति जागरूक है?

(A) मूल्य

(B) निर्माण

(C) गुणवत्ता

(D) इनमें सभी

Ans:-(D)

38. भारतीय मानक संस्थान की स्थापना कब की गई?

(A) 1952

PDF SARTHI.COM

(B) 1942

(C) 1947

(D) 1936

Ans:-(C)

39. उपभोक्ता जागरूकता आंदोलन की शुरुआत किस देश में हुई थी?

(A) इंगलैंड

(B) चीन

(C) जापान

(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

Ans:-(A)

40. कृषि उत्पादों के मानकीकरण के लिए किस मानक का प्रयोग किया जाता है?

(A) एगमार्क

(B) बी०एस०आई०

(C) आई०एस०आई०

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans:-(A)

41. भारत में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस कब मना जाता है?

(A) 5 दिसम्बर को

(B) 15 दिसम्बर को

(C) 24 दिसम्बर को

(D) 30 दिसम्बर को

Ans:-(C)

42. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के अंतर्गत शामिल है-

(A) केवल निजी क्षेत्र की वस्तु

(B) केवल निजी क्षेत्र की सेवा

(C) केवल सार्वजनिक क्षेत्र की वस्तु तथा सेवा

(D) इनमें से सभी

Ans:-(D)

43. उपभोक्ताओं को सामान खरीदते समय निम्नलिखित में से किस मार्क को देखना चाहिए?

(A) एगमार्क

PDF SARTHI.COM

(B) वुलमार्क

(C) हॉलमार्क

(D) उपर्युक्त सभी

Ans:-(D)

44. पैकेट-बंद खाद्य उत्पादों में किन सूचनाओं को प्राप्त करना उपभोक्ता का अधिकार है?

(A) निर्माण की तिथि

(B) अवयवों की सूची

(C) निरामिष / सामिष चिह्न

(D) इनमें सभी

Ans:-(D)

45. उपभोक्ताओं के अधिकार में शामिल है-

(A) चयन का अधिकार

(B) सुरक्षा का अधिकार

(C) सूचना का अधिकार

(D) उपर्युक्त तीनों अधिकार

PDF SARTHI.COM

Ans:-(D)

46. अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन (ISO) का मुख्यालय कहाँ है?

(A) जेनेवा

(B) ढाका

(C) न्यूयार्क

(D) लंदन

Ans:-(A)

47. संयुक्त राष्ट्रसंघ ने किस वर्ष उपभोक्ता के अधिकारों एवं सुरक्षा के लिए सिद्धांत निर्धारित किए?

(A) 1985

(B) 1990

(C) 2005

(D) 2010

Ans:-(A)

48. राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन नं० क्या है?

(A) 100

PDF SARTHI.COM

(B) 1000-100

(C) 1800-11-4000

(D) 20,00-11,4000

Ans:-(C)

49. आवश्यक वस्तु अधिनियम कब पारित किया गया?

(A) 1950

(B) 1952

(C) 1955

(D) 1957

Ans:-(C)

PDF SARTHI.COM